यूहन्ना रचित सुसमाचार

यूहन्ना द्वारा खुशी की खबर

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर
के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था। 3 सब
कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ। जो कुछ
उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके
बिना उत्पन्न न हुई।
4 उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों
की रोशनी थी। 5 रोशनी अन्धकार में
चमकती है, और अन्धकार ने उसे नहीं
अपनाया।
6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ
उपस्थित हुआ जिस का नाम यूहन्ना था।
7 वह गवाही देने आया कि ज्योति[a] की
गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास
लाएँ। 8 वह स्वयं तो रोशनी न था, परन्तु उस
रोशनी की गवाही देने के लिए आया था।
9 सच्ची रोशनी जो हर एक इन्सान को
रोशनीमय करती है, दुनिया में आने वाली
थी। 10 यीशु जगत में थे, और जगत उनके
द्वारा उत्पन्न हुआ। लेकिन दुनिया ने उन्हें नहीं
पहचाना। 11 वह अपने घर आए और उनके
अपनों ने उन्हें नहीं अपनाया।
12 परन्तु जितनों ने उन्हें अपनाया, यीशु
ने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का हक
दिया, अर्थात् उन लोगों को जो उनके नाम
पर विश्वास रखते हैं। 13 वे न तो खून से, न
शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से,
परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।
14 और वचन ने देह धारण की, और कृपा
और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में
आकर रहा, और हम ने उसकी ऐसी महिमा
देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
15 यूहन्ना ने उनके बारे में गवाही दी और
पुकार कर कहा, “यह वही हैं, जो मेरे बाद
आ रहे हैं, वह मुझ से बढ़ कर हैं क्योंकि वह
मुझ से पहले थे।”
16 क्योंकि उनकी भरपूरी से हम सब ढेर
सारी कृपा हासिल कर सके । 17 नियमशास्त्र
मूसा के द्वारा दिया गया, परन्तु कृपा, और
सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।
18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा,
केवल ‘एकलौते पुत्र’ ने जो पिता की गोद में[b]
हैं, परमेश्वर को प्रगट किया।
19 यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब
यहूदियों ने यरूशलेम से पुरोहितों और
लेवियों को उससे यह पूछने के लिए भेजा
कि वह कौन है,
20 तो उसने यह मान लिया कि वह मसीह
नहीं है।
21 तब उन्होंने उससे पूछा, “तो फिर
तुम कौन हो? क्या तुम एलिय्याह हो?”
उसने उत्तर दिया, “नहीं।” “तो क्या तुम
कोई भविष्यद्वक्ता हो?” उसने उत्तर दिया,
“नहीं”।
22 तब उन्होंने उससे फिर पूछा, “तो तुम
हो कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को

---

[a] **1.7** रोशनी [b] **1.18** पिता के साथ

जवाब दें, तुम अपने विषय में क्या कहते
हो?”
23 उसने कहा, जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता
ने कहा है, “मैं जंगल में एक पुकारने वाले का
शब्द हूँ, ‘प्रभु का मार्ग तैयार करो।’”
24 ये सवाल पूछने वाले लोग फ़रीसियों की
ओर से भेजे गए थे। 25 आखिर में उन लोगों
ने उससे पूछा, “यदि तुम न मसीह हो, और
न एलिय्याह, और न कोई भविष्यद्वक्ता, तो
फिर बपतिस्मा क्यों देते हो?”
26 यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, “मैं तो पानी
से बपतिस्मा हूँ परन्तु तुम्हारे बीच में एक
व्यक्ति हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते 27 जिन की
सेवकाई आरम्भ होने वाली है। वह मुझ से
श्रेष्ठ हैं। उनकी जूती का फ़ीता भी मैं खोलने
के लायक नहीं।”
28 ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुईं,
जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था। 29 दूसरे दिन
उसने यीशु को अपनी ओर आते देख कर
कहा, “देखो, यही परमेश्वर के मेम्ने हैं, जो
दुनिया के लोगों के गुनाह उठाने वाले हैं।
30 यह वही हैं, जिन के विषय में मैंने कहा
था कि एक पुरुष मेरे बाद आएँगे जो मुझ से
श्रेष्ठ हैं, क्योंकि वह मुझ से पहले थे। 31 मैं
तो उन्हें पहचानता न था। मैं इसलिए पानी से
बपतिस्मा देता आया हूँ ताकि वह इस्राएल
पर प्रगट हो जाएँ।”
32 यूहन्ना ने यह गवाही दी, “मैंने आत्मा को
फ़ाख्ते के समान आकाश से उतरते देखा था,
और वह उन पर ठहर गया था। 33 मैं तो उन्हें
पहचानता नहीं था, लेकिन जिन्होंने मुझे पानी
से बपतिस्मा देने को भेजा था, उन्हीं ने मुझ
से कहा था, कि जिस पर तुम आत्मा को
उतरते और ठहरते देखो, वही पवित्र आत्मा
से बपतिस्मा देने वाले हैं। 34 और मैंने देखा,
और गवाही दी है कि यही परमेश्वर के बेटे
या परमेश्वर हैं।
35 दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके शिष्यों
में से दो जन वहाँ खड़े थे। 36 तब यूहन्ना ने
यीशु को देख कर कहा, “देखो, यह परमेश्वर
के मेम्ने हैं।”
37 वे दोनों शिष्य यूहन्ना की यह बात सुन
कर यीशु के पीछे हो लिए।
38 यीशु ने उनको अपने पीछे आते हुए देखा
और उन से कहा, “तुम किस को ढूँढ रहे
हो?” उन्होंने यीशु से कहा, गुरु जी आप कहाँ
रहते हैं?” यीशु ने उन से कहा, “चल कर देख
लो।”
39 तब उन लोगों ने आकर उनके रहने की
जगह देखी, और वे उस दिन उन्हीं के साथ
रहे। उस समय शाम के तकरीबन चार बजे
थे।
40 उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुन
कर यीशु के साथ चल पड़े थे, एक शमौन
पतरस का भाई, अन्द्रियास था। 41 उसने
पहले अपने सगे भाई शमौन से मिल कर
कहा, कि हम को ख्रिस्तुस अर्थात् मसीह
मिल गए हैं।
42 वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस
को देख कर कहा, “तुम तो यूहन्ना के पुत्र
शमौन हो, तुम अब से काइफ़ा अर्थात् पतरस
कहलाओगे।”
43 दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना
चाहा। उन्होंने फ़िलिप्पुस से मिल कर कहा,
“मेरे पीछे आओ।”
44 फ़िलिप्पुस, अन्द्रियास और पतरस के
नगर बैतसैदा का निवासी था। 45 फ़िलिप्पुस
ने नतनएल से मिल कर उससे कहा, “जिन
का वर्णन मूसा के नियमशास्त्र में और
भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में है, वह हम

को मिल गये हैं। वह यूसुफ़ के पुत्र, यीशु नासरी हैं।"

46 नतनएल ने उससे कहा, "क्या कोई भी अच्छी वस्तु नासरत से निकल सकती है?" फ़िलिप्पुस ने उत्तर दिया, "चल कर देख लो।"

47 यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देख कर उसके विषय में कहा, "देखो, यह सचमुच इस्राएली है, इस में कपट नहीं।"

48 नतनएल ने उन से कहा, "आप मुझे कहाँ से जानते हैं?" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "इस से पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुम्हें बुलाया, जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे थे, तब मैंने तुम्हें देखा था।"

49 नतनएल ने उन्हें उत्तर दिया, "हे गुरु, आप परमेश्वर के बेटे(या देहधारी परमेश्वर)हैं। आप इस्राएल के महाराजा हैं।"

50 यीशु ने उसको जवाब दिया, "मैंने जो तुम से कहा, कि मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा, क्या तुम इसलिए विश्वास करते हो? तुम इस से बड़े-बड़े काम देखोगे।"

51 यीशु ने यह भी कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को, मनुष्य के पुत्र[a] पर उतरते चढ़ते और देखोगे।"

2 फिर तीसरे दिन गलील के काना नामक गाँव में किसी की शादी[b] थी, और यीशु की माँ भी वहाँ थी। 2 यीशु और उनके शिष्य भी विवाह में बुलाए गए थे।

3 जब अंगूर का रस खत्म हो गया, तो यीशु की माता ने यीशु से कहा, "उनके पास अंगूर का रस नहीं है।"

4 यीशु ने उससे कहा, "हे महिला, मुझे तुम से क्या लेना-देना? अभी मेरा समय नहीं आया है।"

5 यीशु की माँ ने सेवकों से कहा, "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।"

6 वहाँ यहूदियों के शुद्ध करने की रिवाज़ के अनुसार पत्थर के छः मटके रखे थे, जिन में दो-दो, तीन तीन मन पानी समाता था।

7 यीशु ने उन से कहा, "मटकों में पानी भर दो।" तब उन्होंने उन मटकों को मुहामुँह भर दिया।

8 तब यीशु ने उन से कहा, "अब निकाल कर दावत के प्रधान के पास ले जाओ।"

9 वे ले गए। जब दावत के प्रधान ने वह पानी चखा, जो अंगूर का रस बन गया था, और नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया है,[c] तो उसने दूल्हे को बुलाकर उससे कहा, 10 "हर एक आदमी पहले अच्छा अंगूर का रस देता है। जब लोग पीकर तृप्त हो जाते हैं, तब पानी मिला हुआ देता है परन्तु तुमने अच्छा अंगूर का रस अब तक रख छोड़ा है।"

11 यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चिन्ह दिखा कर अपनी महिमा दिखा दी और उनके शिष्यों ने उन पर विश्वास किया।

12 इसके बाद वह, उनकी माँ तथा उनके भाई और उनके शिष्य कफ़रनहूम को गए और वे वहाँ कुछ दिन रहे।

13 यहूदियों के फ़सह का त्यौहार नज़दीक था और यीशु यरूशलेम को गये। 14 तब उन्होंने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर बेचने वालों और सर्राफ़ों को बैठे हुए पाया, 15 और रस्सियों का कोड़ा बना कर सब

[a] **1.51** या मुझको [b] **2.1** विवाह [c] **2.9** परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे

भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया। उन्होंने सर्राफ़ों के पैसे बिखेर दिए और पीढ़ों को उलट दिया। 16 उन्होंने कबूतर बेचने वालों से कहा, “इन्हें यहाँ से ले जाओ, मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।”

17 तब उनके शिष्यों को याद आया कि लिखा है, ‘आपके घर की धुन मुझे खा जाएगी’।

18 इस पर यहूदियों ने उन से कहा, “आप ऐसा करने के द्वारा हमें कौन सा चिन्ह दिखाते हैं?”

19 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।”

20 यहूदियों ने कहा, “इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं। क्या आप उसे केवल तीन दिन में खड़ा कर देंगे?”

21 लेकिन यीशु ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था। 22 इसलिए जब वह मरे हुओं में से जी उठे तो उनके शिष्यों को याद आया, कि यीशु ने यह कहा था। और उन्होंने पवित्र वचन और उस शब्द पर जो यीशु ने कहा था, विश्वास किया।

23 जब वह यरूशलेम में फ़सह के समय त्यौहार में थे, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाते थे देख कर उनके नाम पर विश्वास किया। 24 परन्तु यीशु ने उन पर भरोसा नहीं किया, क्योंकि वह सब को जानते थे। 25 और उन्हें ज़रूरी न था, कि इन्सान के बारे में कोई गवाही दे, क्योंकि वह खुद ही जानते थे कि मनुष्य के मन में क्या है।

3 फ़रीसियों में से नीकुदेमुस नाम का एक आदमी था। वह यहूदियों का धार्मिक अगुवा था। 2 उसने रात के समय यीशु के पास आकर कहा, “हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की तरफ़ से गुरु हो कर आए हैं, क्योंकि जिन चिन्हों को आप दिखाते हैं, उन्हें यदि परमेश्वर साथ न हो तो कोई नहीं दिखा सकता।”

3 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि अगर कोई नये तरीके से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता है।”

4 नीकुदेमुस ने यीशु से पूछा, “इन्सान बूढ़ा हो जाने पर कैसे फिर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार जाकर जन्म ले सकता है?”

5 यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई व्यक्ति पानी और आत्मा से न जन्में, तब तक वह परमेश्वर के राज्य में दाखिल नहीं हो सकता। 6 क्योंकि जो देह से जन्मा है, वह देह है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। 7 अचम्भा न करो कि मैंने तुम से कहा कि तुम्हें नये तरीके से जन्म लेना ज़रूरी है। 8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तुम उसकी आवाज़ सुनते हो, लेकिन नहीं जानते कि वह कहाँ से आती है और किधर जाती है। जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।”

9 नीकुदेमुस ने उनको उत्तर दिया, “ये बातें कैसे हो सकती हैं?”

10 यह सुन कर यीशु ने उससे कहा, “तुम यहूदियों के गुरु होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझते? 11 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं। जिसे हम ने देखा है हम उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही स्वीकार नहीं करते। 12 जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, तो तुम भरोसा नहीं करते, सो यदि मैं तुम से स्वर्ग

की बातें कहूँ, तो फिर कैसे भरोसा करोगे?
13 कोई और स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही
जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो
स्वर्ग में है।
14 जिस तरह से मूसा ने जंगल में साँप
को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी तरीके से ज़रूरी
है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया
जाए, 15 ताकि जो कोई विश्वास करे, उस
में अनन्त जीवन पाए।
16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम
किया कि उन्होंने अपना एकलौता पुत्र दे
दिया, ताकि जो कोई उन पर विश्वास करे
वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने बेटे को जगत में
इसलिए नहीं भेजा कि दुनिया पर सज़ा की
आज्ञा दें, परन्तु इसलिए कि दुनिया उनके
द्वारा मुक्ति पाए। 18 जो उन पर विश्वास
करता है उस पर सज़ा की आज्ञा नहीं
होती, लेकिन जो उन पर विश्वास नहीं
करता, वह दोषी ठहर चुका है, इसलिए कि
उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर
विश्वास नहीं किया। 19 सज़ा की आज्ञा का
कारण यह है कि रोशनी जगत में आयी और
लोगों ने अन्धेरे को रोशनी से अधिक बेहतर
जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। 20 क्योंकि
जो कोई बुराई करता है, वह रोशनी से
दुश्मनी रखता है, और रोशनी के पास नहीं
आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष
लगाया जाए। 21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता
है, वह रोशनी के पास आता है, ताकि उसके
काम दिख जाएँ कि वे परमेश्वर की तरफ़
से किए गए हैं।”
22 इसके बाद यीशु और उनके शिष्य
यहूदिया देश में आए और यीशु वहाँ उनके
साथ रह कर बपतिस्मा देने लगे। 23 यूहन्ना
भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता
था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था और लोग
आकर वहीं बपतिस्मा लेते थे। 24 यूहन्ना उस
समय तक कैदखाने में नहीं डाला गया था।
25 वहाँ यूहन्ना के शिष्यों का किसी
यहूदी व्यक्ति के साथ शुद्धि के विषय में
वाद-विवाद हुआ। 26 लोगों ने यूहन्ना के पास
आकर उससे कहा, “हे गुरू, जो व्यक्ति
यरदन के पार आपके साथ थे, और जिन की
आपने गवाही दी है, वह भी बपतिस्मा देते
हैं, और सब उन्हीं के पास जाते हैं।”
27 यूहन्ना ने उत्तर दिया, “जब तक मनुष्य
को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ
नहीं पा सकता। 28 तुम तो खुद ही मेरे गवाह
हो कि मैंने कहा कि मैं मसीह नहीं, परन्तु
उनके पहले भेजा गया हूँ। 29 जिस की दुल्हन
है, वही दूल्हा है। दूल्हे का दोस्त तो खड़ा
हुआ दूल्हे की सुनता है, और दुल्हे के शब्द
से बहुत खुश होता है। अब मेरी यह खुशी
पूरी हुयी है। 30 यह ज़रूरी है कि वह बढ़ें
और मैं घटूँ। 31 जो ऊपर से आता है वह
सर्वोत्तम है। जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी
का है, वह पृथ्वी की ही बातें कहता है। जो
स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है। 32 जो
कुछ उन्होंने अर्थात् यीशु ने देखा और सुना
है, वह उसी की गवाही देते हैं, और कोई
उनकी गवाही स्वीकार नहीं करता। 33 जिस
ने उनकी गवाही स्वीकार कर ली उसने इस
बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चे हैं।
34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह
परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि वह
आत्मा नाप नापकर नहीं देते।
35 स्वर्गिक पिता पुत्र से प्रेम रखते हैं, और
उन्होंने सब कुछ उसके हाथ में दे दिया है।
36 जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त

जीवन उसका है। परन्तु जो पुत्र की नहीं
मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, लेकिन
परमेश्वर का गुस्सा[a] उस पर रहता है।"

4 फिर जब यीशु को मालूम हुआ, कि
फ़रीसियों ने सुना है कि वह यूहन्ना से
अधिक शिष्य बनाते, और उन्हें बपतिस्मा
देते हैं, 2 हालांकि यीशु खुद नहीं, लेकिन
उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे। 3 तब यीशु
यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चले
गये। 4 और उनको सामरिया से होकर जाना
ज़रूरी था। 5 इसलिए वह सूखार नामक
सामरिया के एक नगर तक आए, जो उस
जगह के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र
यूसुफ़ को दिया था। 6 याकूब का कुआँ भी
वहीं था। इसलिए यीशु मार्ग के थके हुए,
उस कुएँ पर जाकर बैठ गये। यह दोपहर का
समय था
7 उसी समय एक सामरी महिला वहाँ पानी
भरने के लिये आयी। यीशु ने उससे कहा,
"मुझे पानी पिलाओ।" 8 उनके शिष्य उस
समय नगर में भोजन मोल लेने गए थे।
9 उस सामरी महिला ने उन से कहा, "आप
यहूदी होकर मुझ सामरी महिला से पानी क्यों
माँगते हैं?"[b]।
10 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम परमेश्वर
के वरदान को जानती, और यह भी जानती
कि वह कौन है जो तुम से कहता है कि मुझे
पानी पिलाओ, तो तुम उससे माँगती और वह
तुम्हें जीवन का जल देता।"
11 महिला ने उन से कहा, "हे प्रभु, आपके
पास पानी भरने लिए तो कुछ है भी नहीं,
और कुआँ गहरा है। फिर वह जीवन का पानी
आपके पास कहाँ से आया? 12 क्या आप
हमारे पिता याकूब से बड़े हैं, जिस ने हमें यह
कुआँ दिया?
13 उसने खुद भी अपनी सन्तान, और अपने
जानवरों समेत उसमें से पीया था।" यीशु
ने उसको उत्तर दिया, "जो कोई यह पानी
पीएगा, वह फिर प्यासा होगा। 14 लेकिन जो
कोई उस पानी में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा,
वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा।
लेकिन जो पानी मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक
सोता बन जाएगा और अनन्त जीवन के लिए
उमड़ता रहेगा।"
15 महिला ने उन से कहा, "हे प्रभु, वह पानी
मुझे दीजिए ताकि मैं प्यासी न होऊँ और
न मुझे पानी भरने के लिये इतनी दूर आना
पड़े।"
16 यीशु ने उससे कहा, "जाओ, अपने पति
को यहाँ बुला लाओ।"
17 महिला ने उत्तर दिया, मेरा कोई पति नहीं
है।" यीशु ने उससे कहा, "तुम ठीक कहती
हो कि मेरा कोई पति नहीं है। 18 क्योंकि तुम
पाँच पति कर चुकी हो, और जिस के पास
तुम अब हो, वह भी तुम्हारा पति नहीं है, यह
तुमने सच कहा"
19 महिला ने उन से कहा, "प्रभु, मुझे ऐसा
लगता है कि आप भविष्यद्वक्ता हैं। 20 हमारे
बुज़ुर्गों ने इसी पहाड़ पर भजन किया; और
आप यहूदी लोग कहते हैं कि वह जगह जहाँ
भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।"
21 यीशु ने उससे कहा, "महिला, मेरी बात
का भरोसा करो कि वह समय आता है कि
तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन
करोगे, न यरूशलेम में। 22 तुम जिसे नहीं
जानते, उसका भजन करते हो, और हम
जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं, क्योंकि

[a] **3.36** दण्ड [b] **4.9** क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी तरह का रिश्ता नहीं रखते थे

मुक्ति यहूदियों में से है। 23 लेकिन ऐसा
वक्त आ रहा है, लेकिन अब भी है जब सच्चे
भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से
करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भजन
करने वालों को ढूँढते हैं। 24 परमेश्वर आत्मा
हैं, और अवश्य है कि उनके भजन करने
वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।"
25 महिला ने उन से कहा, "मैं जानती हूँ कि
मसीह जो ख्रिस्तुस कहलाते हैं, आने वाले हैं।
जब वह आएँगे, तो हमें सब बातें बताएँगे।"
26 यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुम से बोल
रहा हूँ, वही हूँ।"
27 इतने में उनके शिष्य आ गए, और
अचम्भा करने लगे कि वह महिला से बातें
कर रहे हैं। तौभी किसी ने न कहा, "आप
क्या चाहते हैं? या क्यों उससे बातें कर रहे
हैं?"
28 उसके बाद महिला अपना घड़ा छोड़कर
नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी,
29 "आओ, एक आदमी को देखो, जिस ने
सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं
यही तो मसीह नहीं हैं?" 30 तब वे नगर से
निकल कर यीशु के पास आने लगे।
31 इतने में उनके शिष्य यीशु से बिनती
करने लगे, गुरू जी, कुछ खा लीजिए।
32 लेकिन यीशु ने उत्तर दिया, "मेरे पास
खाने के लिए ऐसा भोजन है जिस के बारे
में तुम नहीं जानते।"
33 तब शिष्यों ने आपस में कहा, "क्या
उनके लिए कोई कुछ खाने के लिये लाया
है?"
34 यीशु ने उन से कहा, "मेरा खाना यह है
कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार
चलूँ और उनका काम पूरा करूँ। 35 क्या
तुम नहीं कहते कि कटनी होने में अब भी
चार महीने पड़े हैं? अपनी आँखें उठा कर
खेतों पर नज़र डालो। वे कटनी के लिए पक
चुके हैं। 36 काटने वाला मज़दूरी पाता, और
अनन्त जीवन के लिए फल बटोरता है, ताकि
बोने वाला और काटने वाला दोनों मिल कर
आनन्द मनाएँ। 37 क्योंकि यहाँ यह कहावत
उचित ही है, कि बोने वाला एक है और
काटने वाला कोई दूसरा। 38 मैंने तुम्हें वह
खेत काटने के लिए भेजा जिस में तुमने मेहनत
नहीं की, लेकिन दूसरों ने की और तुम उनकी
मेहनत के फल में भागी हुए।"
39 उस नगर के बहुत सामरियों ने उस
महिला के कहने से विश्वास किया। उस
महिला ने यह गवाही दी थी, कि यीशु ने
वह सब कुछ जो उसने किया था, उसे बता
दिया। 40 जब ये सामरी यीशु के पास आए,
तो उन से बिनती करने लगे, "हमारे यहाँ
रहिए।" इसलिए वह वहाँ दो दिन तक रहे।
41 उनकी शिक्षा के कारण और भी कई लोगों
ने विश्वास किया। 42 उन्होंने उस महिला से
कहा, "अब हम तुम्हारे कहने से ही विश्वास
नहीं करते, क्योंकि हम ने खुद ही सुन लिया,
और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत के
मुक्तिदाता हैं।"
43 उन दो दिनों के बाद वह वहाँ से निकल
कर गलील को गए। 44 यीशु ने खुद ही यह
गवाही दी थी कि भविष्यद्वक्ता अपने देश
में आदर नहीं पाता। 45 जब वह गलील में
आए, तो गलीली आनंद के साथ उन से
मिले, क्योंकि जितने काम उन्होंने यरूशलेम
में त्यौहार के समय किए थे, उन सब को
उन्होंने देखा था, क्योंकि वे भी त्यौहार में
गए थे।
46 तब वह फिर गलील के काना में आए,
जहाँ उन्होंने पानी को अंगूर का रस बनाया
था। वहाँ राजा का एक कर्मचारी था, जिस
का बेटा कफ़रनहूम में बीमार था। 47 यह सुन

कर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गये
हैं, वह उनके पास गया और उन से बिनती
करने लगा, “चल कर मेरे बेटे को अच्छा
कर दीजिए।” वह लड़का मरने पर था।
48 यीशु ने उससे कहा, “जब तक तुम चिन्ह
और अजीब काम न देखोगे, तब तक कभी
भी विश्वास न करोगे।”
49 राजा के कर्मचारी ने उन से कहा, “हे
प्रभु, मेरे बेटे की मौत होने से पहले चलिए।”
50 यीशु ने उससे कहा, “जाओ, तुम्हारा
बेटा जिंदा है।” उस मनुष्य ने यीशु की कही
हुई बात को मान लिया, और चला गया।
51 वह वापस जा रहा था, कि उसके दास
उससे आ मिले और कहने लगे कि तुम्हारा
लड़का जिंदा है। 52 उसने उन से पूछा, “किस
समय से उसकी तबियत ठीक होने लगी
थी?” उन्होंने उससे कहा, “कल दोपहर
लगभग एक बजे उसका बुखार उतर गया।”
53 तब पिता जान गया कि वह उसी समय
हुआ जिस समय यीशु ने उससे कहा था कि
तुम्हारा बेटा जिंदा है। तब उसने और उसके
सारे घराने ने विश्वास किया।
54 यह दूसरा आश्चर्यकर्म था, जो यीशु ने
यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

5 इन बातों के बाद यहूदियों का एक
त्यौहार हुआ जिस में यीशु यरूशलेम
को गये। 2 यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास
एक तालाब है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा
कहलाता है, और उसके पाँच ओसारे हैं।
3 इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लँगड़े और
सूखे अंग वाले पानी के हिलने की आशा में
पड़े रहते थे। 4 क्योंकि नियुक्त समय पर
परमेश्वर के स्वर्गदूत तालाब में उतर कर
पानी को हिलाया करते थे। पानी हिलते ही
जो कोई पहले उतरता था वह ठीक हो जाता
था, चाहे उसकी कोई भी बीमारी क्यों न हो।
5 वहाँ एक आदमी था जो अड़तीस साल से
बीमारी में पड़ा था। 6 यीशु ने उसे पड़ा हुआ
देख कर और जान कर कि वह बहुत दिनों
से इस हालत में पड़ा है, उससे पूछा, “क्या
तुम ठीक होना चाहते हो?”
7 उस बीमार ने यीशु को उत्तर दिया, “हे
प्रभु, मेरे पास कोई मददगार नहीं है कि जब
पानी हिलाया जाए, तो मुझे तालाब में उतारे।
मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहले उतर
जाता है।”
8 यीशु ने उससे कहा, “उठो, अपनी खाट
उठा कर चलो।”
9 वह मनुष्य तुरन्त अच्छा हो गया, और
अपनी खाट उठा कर चलने फिरने लगा।
10 वह सब्त का दिन था, इसलिए यहूदी
उससे, जो ठीक हो गया था कहने लगे,
“आज तो सब्त का दिन है, तुम्हें आज खाट
उठानी जायज़ नहीं।”
11 उसने उन्हें जवाब दिया, “जिस ने मुझे
अच्छा किया, उसी ने मुझ से कहा कि अपनी
खाट उठा कर चलो।”
12 उन्होंने उससे पूछा, “वह कौन आदमी
है जिस ने तुम से कहा कि खाट उठा कर
चलो?”
13 जो अच्छा हो गया था, वह नहीं जानता
था कि वह कौन है, क्योंकि उस जगह में भीड़
होने के कारण यीशु वहाँ से हट गये थे। 14 इन
बातों के बाद वह आदमी यीशु को मन्दिर में
मिला, तब उन्होंने उससे कहा, “देखो, तुम

तो ठीक हो गये हो, फिर से गुनाह मत करना,
ऐसा न हो कि इस से कोई भारी मुसीबत तुम
पर आ पड़े।"
15 उस आदमी ने जाकर यहूदियों से कह
दिया कि जिस ने मुझे अच्छा किया, वह यीशु
हैं। 16 इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे,
क्योंकि वह ऐसे काम सब्त के दिन करते थे।
17 इस पर यीशु ने उन से कहा, "मेरे पिता
अब तक काम करते हैं, और मैं भी काम
करता हूँ।"
18 इस कारण यहूदी और भी अधिक उन्हें
मार डालने की कोशिश करने लगे, क्योंकि
वह न केवल सब्त के दिन की विधि को
तोड़ते, लेकिन परमेश्वर को अपना पिता
कह कर अपने आपको परमेश्वर के समान
ठहराते थे।
19 इस पर यीशु ने उन से कहा, "मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ, पुत्र स्वयं कुछ नहीं
कर सकता, केवल वही जो पिता को करते
देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को पिता
करते हैं, उन्हें पुत्र भी उसी तरह से करता है।
20 क्योंकि पिताजी बेटे से प्रेम रखते हैं और
जो-जो काम वह खुद करते हैं वह सब बेटे
को दिखाते हैं। वह इन से भी बड़े काम उसे
दिखाएँगे, ताकि तुम अचम्भा करो।
21 क्योंकि जैसे पिता मरे हुओं को उठाते
और जिलाते हैं, वैसे ही बेटा भी जिन्हें
चाहता है उन्हें जिलाता है। 22 पिता किसी का
इन्साफ़ भी नहीं करते, परन्तु इन्साफ़ करने
का सब काम पिता ने पुत्र[a] को सौंप दिया है,
23 इसलिए कि सब लोग जैसे पिता का आदर
करते हैं, वैसे ही पुत्र का भी आदर करें।
जो बेटे का आदर नहीं करता, वह पिता का
जिन्होंने बेटे को भेजा है, आदर नहीं करता।
24 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मेरी
शिक्षा सुन कर मेरे भेजने वाले परमेश्वर पर
विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है।
उस पर सज़ा का हुक्म नहीं होता, परन्तु वह
मौत के पार होकर जीवन में दाखिल हो चुका
है।
25 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि वह
समय आता है, और अब है, जिस में मुर्दे
परमेश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे, और
जो सुनेंगे वे जिएँगे। 26 क्योंकि जिस तरह से
पिता अपने आप में जीवन रखते हैं, उसी तरह
से उन्होंने बेटे को भी यह अधिकार दिया है
कि अपने आप में जीवन रखे, 27 वरन् उन्हें
इन्साफ़ करने का भी अधिकार दिया गया है
इसलिए कि वह[b] ही मनुष्य का पुत्र[c] भी हैं।
28 इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह
समय आता है कि जितने कब्रों में हैं, पुत्र का
शब्द सुन कर जी उठेंगे। 29 जिन्होंने भलाई
की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी
उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के
पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे।
30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता।
जैसा मैं सुनता हूँ, वैसा ही न्याय करता हूँ।
मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा
नहीं, लेकिन अपने भेजने वाले की इच्छा
चाहता हूँ।
31 यदि मैं स्वयं ही अपनी गवाही दूँ तो मेरी
गवाही सच्ची नहीं। 32 परमेश्वर हैं जो मेरी
गवाही देते हैं, और मैं जानता हूँ कि उनकी
हर गवाही सच्ची है।
33 तुमने यूहन्ना से पूछा और उसने सच्चाई
की गवाही दी है। 34 परन्तु मैं अपने बारे
में इन्सान की गवाही नहीं चाहता, तौभी मैं
ये बातें इसलिए कहता हूँ कि तुम्हें मुक्ति

[a] 5.22 यीशु [b] 5.27 यीशु [c] 5.27 इन्सान

मिले। 35 यूहन्ना तो जलता और चमकता हुआ
दीपक था, और तुम्हें कुछ देर तक उसकी
रोशनी में मगन होना अच्छा लगा।
36 लेकिन मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना
की गवाही से बड़ी है, क्योंकि जो काम पिता
ने मुझे पूरा करने को सौंपा है, अर्थात् यही
काम जो मैं करता हूँ, वे काम इस बात के
गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है।
37 पिता, जिन्होंने मुझे भेजा है, उन्होंने
मेरी गवाही दी है। तुमने न कभी उनका
शब्द सुना, और न उनका रूप देखा है।
38 तुम उनकी बातों को मन में बना कर नहीं
रखते, क्योंकि जिसे उन्होंने भेजा है उस पर
विश्वास नहीं करते हो।
39 तुम बाइबल में ढूँढते हो, क्योंकि
समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें
मिलता है। ये वे बातें हैं, जो मेरी गवाही देते
हैं। 40 फिर भी तुम जीवन पाने के लिए मेरे
पास आना नहीं चाहते।
41 मैं मनुष्यों से इज़्ज़त नहीं चाहता।
42 लेकिन मैं तुम्हें जानता हूँ कि तुम में
परमेश्वर का प्यार नहीं।
43 मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ,
लेकिन तुम मुझे ग्रहण नहीं करते। यदि कोई
और अपने ही नाम से आए, तो तुम उसे ग्रहण
कर लोगे।
44 तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? तुम
तो एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो, लेकिन वह
इज़्ज़त जो सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की ओर से है,
नहीं चाहते।
45 यह न समझो कि मैं पिता के सामने तुम
पर दोष लगाऊँगा। तुम पर दोष लगाने वाला
तो है, अर्थात् मूसा, जिस पर तुमने भरोसा
रखा है। 46 क्योंकि अगर तुम मूसा पर भरोसा
करते, तो मझ पर भी भरोसा करते, इसलिए
कि उसने मेरे विषय में लिखा है। 47 परन्तु
यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों पर भरोसा
नहीं करते, तो मेरी बातों पर कैसे भरोसा
करोगे?”

6 इन बातों के बाद यीशु गलील की झील
अर्थात् तिबिरियास की झील के पास
गए। 2 तब एक बड़ी भीड़ उनके पीछे चल
पड़ी, क्योंकि जो अजीब काम वह बीमारों
पर दिखाते थे, वे उनको देखते थे।
3 तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने शिष्यों
के साथ वहाँ बैठ गए। 4 यहूदियों के फ़सह
का त्यौहार निकट था।
5 फिर यीशु ने अपनी आँखें उठा कर एक
बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और
फ़िलिप्पुस से कहा कि हम इन के खाने
के लिए कहाँ से रोटी मोल लाएँ? 6 लेकिन
उन्होंने यह बात फ़िलिप्पुस को परखने के
लिए कही, क्योंकि वह खुद जानते थे कि
वह क्या करेंगे।
7 फ़िलिप्पुस ने उनको उत्तर दिया, “दो सौ
दीनार की रोटी उनके लिए पूरी भी न होगी
कि उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल
जाए।”
8 उनके शिष्यों में से शमौन पतरस के
भाई अन्द्रियास ने उन से कहा, 9 “यहाँ एक
लड़का है जिस के पास जौ की पाँच रोटी
और दो मछलियाँ हैं, परन्तु इतने लोगों के
लिए उससे क्या होगा?”
10 यीशु ने कहा, “लोगों को बैठा दो।” वहाँ
बहुत घास थी। तब वे लोग जो गिनती में
लगभग पाँच हज़ार पुरुष थे, बैठ गए।
11 फिर यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद
करके बैठने वालों को बाँट दीं और उसी तरह
मछलियों में से जितनी वे चाहते थे।

12 जब वे खा कर तृप्त हो गए तो उन्होंने
अपने शिष्यों से कहा, “बचे हुए टुकड़े बटोर
लो ताकि कुछ फेंका न जाए।”
13 उन्होंने उन्हें बटोरा, और जौ की पाँच
रोटियों के टुकड़े जो खाने के बाद बच गए
थे, उनकी बारह टोकरियाँ भरीं।
14 तब जो आश्चर्यकर्म उन्होंने कर दिखाया
उसे देख कर लोग कहने लगे, कि वह
भविष्यद्वक्ता जो दुनिया में आने वाले थे
निश्चिय यही हैं।
15 यीशु यह जान कर, कि वे मुझे राजा
बनाने के लिए आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर
पहाड़ पर अकेले चले गए।
16 शाम के वक्त उनके शिष्य झील के
किनारे गए 17 और नाव पर चढ़कर झील
के उस पार कफ़रनहूम को जाने लगे। उस
समय अन्धेरा हो गया था, और ऐसा हुआ
कि यीशु अभी तक उनके पास नहीं आए
थे। 18 आन्धी के कारण झील में लहरें उठने
लगीं। 19 जब वे खेते-खेते तीन चार मील के
लगभग निकल गए, तो उन्होंने यीशु को झील
पर चलते, और नाव के निकट आते देखा,
और डर गए।
20 लेकिन यीशु ने उन से कहा, “मैं हूँ! डरो
मत।”
21 तब वे उन्हें नाव पर चढ़ा लेने के लिए
तैयार हुए और तुरन्त वह नाव उस स्थान पर
जा पहुँची जहाँ वे जाना जाते थे।
22 दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो झील के
पार खड़ी थी, यह देखा कि यहाँ एक को
छोड़कर और कोई छोटी नाव नहीं है। यीशु
अपने शिष्यों के साथ उस नाव पर नहीं चढ़े
थे लेकिन केवल उनके शिष्य चले गए थे।
23 फिर भी और छोटी नावें तिबिरियास से
उस जगह के निकट आयीं, जहाँ उन्होंने प्रभु
के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई थी।
24 इसलिए जब भीड़ ने देखा कि यहाँ न यीशु
हैं, और न उनके शिष्य, तो वे भी छोटी
छोटी नावों पर चढ़ कर यीशु को ढूँढते हुए
कफ़रनहूम को पहुँचे। 25 झील के पार आकर
उन्होंने यीशु से मिल कर कहा, “हे गुरू, आप
यहाँ कब आए?”
26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं
ढूँढते हो कि तुमने अचम्भे के काम देखे
हैं। लेकिन इसलिए कि तुम रोटियाँ खा कर
तृप्त हुए हो। 27 नाश होने वाले खाने के लिए
मेहनत न करो, लेकिन उस खाने के लिए जो
अनन्त जीवन तक बना रहता है। यह खाना मैं
तुम्हें दूँगा। उसके लिए मेहनत करो; क्योंकि
पिता, अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर
दी है।”
28 उन लोगों ने यीशु से कहा, “परमेश्वर के
कार्य करने के लिए हम क्या करें?”
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर का
काम यह है कि तुम उस पर, जिसे उन्होंने
भेजा है, विश्वास करो।”
30 तब उन्होंने उन से कहा, “फिर आप
कौन सा चिन्ह दिखाते हैं कि हम उसे देख
कर आप पर विश्वास करें? आप कौन सा
काम दिखाते हैं? 31 हमारे पूर्वजों ने जंगल में
मन्ना खाया, जैसा लिखा है कि उसने उन्हें
खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी।”
32 यीशु ने उन से कहा, “मैं तुम से सच-सच
कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से
न दी, लेकिन मेरे पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग

से देते हैं। 33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही
है, जो स्वर्ग से उतर कर लोगों को जीवन
देती है।"
34 तब उन्होंने यीशु से कहा, "प्रभु, यह रोटी
हमें सर्वदा दिया करें।"
35 यीशु ने उन से कहा, "जीवन की रोटी
मैं हूँ। जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न
होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह
कभी प्यासा न होगा। 36 लेकिन मैंने तुम से
कहा था कि तुमने मुझे देख भी लिया है, तौभी
विश्वास नहीं करते।
37 जो कुछ पिता मुझे देते हैं वह सब मेरे
पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा,
उसे मैं कभी न निकालूँगा।
38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, लेकिन
अपने भेजने वाले परमेश्वर की इच्छा पूरी
करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ। 39 मेरे भेजने
वाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उन्होंने
मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ,
लेकिन उसे आखिरी दिन फिर जिला उठाऊँ।
40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो
कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास
करे, वह हमेशा का जीवन[a] पाए, और मैं उसे
आखिरी दिन फिर जिला उठाऊँगा।" 41 तब
यहूदी यीशु पर कुड़कुड़ाने लगे, इसलिए कि
उन्होंने कहा था कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी
है, वह मैं हूँ।
42 उन लोगों ने कहा, "क्या यह यूसुफ़ का
बेटा यीशु नहीं, जिस के माता-पिता को हम
जानते हैं? तो वह कैसे कहता है कि मैं स्वर्ग
से उतरा हूँ?"
43 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "आपस में
मत कुड़कुड़ाओ। 44 कोई मेरे पास नहीं आ
सकता, जब तक पिता, जिन्होंने मुझे भेजा है,
उसे खींच न लें और मैं उसको अन्तिम दिन
फिर जिला उठाऊँगा। 45 भविष्यद्वक्ताओं के
लेखों में यह लिखा है कि वे सब परमेश्वर
की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी
ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास
आता है। 46 यह नहीं कि किसी ने पिता को
देखा, परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है,
केवल उसी ने पिता को देखा है।
47 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो कोई
विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का
है। 48 जीवन की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे पूर्वजों
ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। 50 यह
वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, ताकि मनुष्य
उसमें से खाए और न मरे। 51 जीवन की रोटी
जो स्वर्ग से उतरी वह मैं हूँ। यदि कोई इस
रोटी में से खाएगा, तो सदा जीवित रहेगा और
जो रोटी मैं दुनिया के जीवन के लिए दूँगा, वह
मेरी देह है।"
52 इस पर यहूदी यह कह कर आपस में
झगड़ने लगे कि यह मनुष्य कैसे हमें अपनी
देह खाने को दे सकता है?
53 यीशु ने उन से कहा, "मैं तुम से सच-सच
कहता हूँ कि जब तक मनुष्य के पुत्र की देह
में से न खाओ, और उसका खून न पीओ,
तब तक तुम में जीवन नहीं। 54 जो मेरी देह
में से खाता, और मेरा खून पीता है, अनन्त
जीवन उसी का है, और मैं अन्तिम दिन फिर
उसे जिला उठाऊँगा। 55 क्योंकि मेरा मांस
वास्तव में खाने की चीज़ है और मेरा खून
वास्तव में पीने की चीज़ है। 56 जो मेरी देह
में से खाता और मेरा खून पीता है[b], वह
मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उसमें।
57 जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं
पिता के कारण जीवित हूँ, वैसे ही वह भी जो
मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा। 58 जो
रोटी स्वर्ग से उतरी वह यही है, पुरखाओं

[a] **6.40** अनन्त जीवन [b] **6.56** यीशु को खाने का मतलब है, विश्वास के द्वारा साझेदारी

के समान नहीं कि खाया, और मर गए। जो
कोई यह रोटी खाएगा, वह हमेशा[a] जीवित
रहेगा।"
59 ये बातें यीशु ने कफ़रनहूम के एक
आराधनालय में उपदेश देते समय कहीं।
60 इसलिए उनके शिष्यों में से बहुतों ने यह
सुन कर कहा, "यह बात कड़वी सच्चाई है,
इसे कौन अपना सकता है?"
61 यीशु ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे
शिष्य आपस में इस बात पर कुड़कुड़ा रहे हैं,
उन से पूछा, "क्या यह बात तुम्हें असहनीय
लगती है? 62 और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को
जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे तो
क्या होगा? 63 आत्मा तो जीवनदायक है, देह
से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं
वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं। 64 परन्तु तुम
में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।"
क्योंकि यीशु तो पहले ही से जानते थे कि जो
विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं, और कौन
उन्हें पकड़वाएगा।
65 उन्होंने कहा, "इसीलिए मैंने तुम से कहा
था कि जब तक किसी को पिता की ओर से
यह वरदान न दिया जाए, तब तक वह मेरे
पास नहीं आ सकता।"
66 इस पर उनके शिष्यों में से बहुत से
वापस चले गए और उसके बाद उनके साथ
न रहे।
67 तब यीशु ने उन बारहों से कहा, "क्या
तुम भी चले जाना चाहते हो?"
68 शमौन पतरस ने उन्हें उत्तर दिया, "प्रभु,
हम किस के पास जाएँ? अनन्त जीवन की
बातें तो आपके ही पास हैं। 69 और हम
ने विश्वास किया, और जान गए हैं कि
परमेश्वर के पवित्र जन आप ही हैं।"
70 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या मैंने तुम
बारहों को नहीं चुन लिया? तौभी तुम में से
एक व्यक्ति शैतान है।"
71 यह उन्होंने शमौन इस्करियोती के पुत्र
यहूदा के विषय में कहा, क्योंकि यही जो
उन बारहों में से था, उन्हें पकड़वाने पर तुला
हुआ था।

7 इन बातों के बाद यीशु गलील में
सेवकाई करते रहे, क्योंकि यहूदी उन्हें
मार डालने की कोशिश कर रहे थे। इसलिए
वह यहूदिया में दिखाई नहीं देना चाहते थे।
2 उन दिनों यहूदियों का मण्डपों का पर्व
निकट था।
3 इसलिए उनके भाईयों ने उन से कहा,
"यहाँ से यहूदिया को चले जाईये, ताकि जो
काम आप करते हैं, उन्हें आपके शिष्य भी
देखें। 4 क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो मशहूर
होना चाहे, और छिप कर काम करे। अगर
आप ये सब कर ही रहे हैं, तो अपने कामों
को खुले आम कीजिए।" 5 यीशु के भाई भी
उन पर विश्वास नहीं करते थे।
6 तब यीशु ने उन से कहा, "मेरा समय
अभी तक नहीं आया है परन्तु सारा समय
तुम्हारा ही है। 7 संसार तुम से दुश्मनी नहीं

[a] **6.58** सदा

कर सकता, लेकिन वह मुझ से करता है। क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। 8 तुम पर्व में जाओ, मैं अभी नहीं आऊँगा, क्योंकि अभी तक मेरा वक्त पूरा नहीं हुआ है।”

9 वह उन से ये बातें कह कर गलील ही में रह गये। 10 लेकिन जब उनके भाई पर्व में चले गए, तो वहाँ वह खुले आम नहीं, लेकिन दूसरे लोगों की तरह गये।

11 वहाँ यहूदी यीशु को यह कह कर ढूँढने लगे कि वह कहाँ हैं?

12 लोगों में उनके विषय में बहुत सी बातें होती रहीं थी। कितने कहते थे, “वह भला मनुष्य है” और कितने कहते थे कि “नहीं, वह लोगों को भरमाता है।” 13 तौभी यहूदियों के डर के मारे कोई व्यक्ति उनके विषय में प्रगट रूप में नहीं बोलता था।

14 जब पर्व के आधे दिन बीत गए, तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगे। 15 तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, “यीशु को बिना पढ़े विद्या कैसे आ गई?”

16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है। 17 यदि कोई उनकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की तरफ़ से है, या मेरी तरफ़ से। 18 जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजने वाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें झूठ नहीं। 19 क्या मूसा ने तुम्हें नियमशास्त्र नहीं दिया? तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?”

20 लोगों ने उत्तर दिया, “तुम में दुष्टात्मा है। कौन तुम को मार डालना चाहता है?”

21 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैंने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो। 22 इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है[a]। तुम सब्त के दिन मनुष्य का खतना करते हो। 23 जब सब्त के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा के नियमशास्त्र की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों गुस्सा करते हो कि मैंने सब्त के दिन एक इन्सान को पूरी तरह से ठीक किया? 24 मुँह देखा न्याय न करो लेकिन ईमानदारी से इन्साफ़ करो।”

25 तब कितने यरूशलेमी कहने लगे, “क्या यह वही नहीं जिन्हें मार डालने की कोशिश की जा रही है? 26 लेकिन देखो, वह तो खुल्लम-खुल्ला बातें करते हैं, और कोई उन से कुछ नहीं कहता। क्या यह सम्भव है कि अधिकारियों ने सच-सच जान लिया है कि यही मसीह हैं? 27 इन को हम जानते हैं कि किस खानदान से हैं, परन्तु मसीह जब आएँगे, तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ के हैं।”

28 तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकार कर कहा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं तो आप से नहीं आया, परन्तु मेरे भेजने वाले पिता सच्चे हैं, उनको तुम नहीं जानते। 29 मैं उन्हें जानता हूँ क्योंकि मैं उनकी ओर से हूँ और उन्होंने ही मुझे भेजा है।”

30 यह सुन कर उन्होंने यीशु को पकड़ना चाहा, तौभी किसी ने उन पर हाथ न डाला, क्योंकि उनका समय अब तक न आया था। 31 भीड़ में से कई लोगों ने उन पर विश्वास किया, और कहने लगे कि मसीह जब आएँगे, तो क्या इस से अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएँगे, जो इन्होंने दिखाए?

[a] **7.22** यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है, लेकिन तुम्हारे पूर्वजों से चली आई है

32 फ़रीसियों ने लोगों को उनके विषय
में ये बातें चुपके चुपके करते सुना, और
महायाजकों और फ़रीसियों ने उनके पकड़ने
के लिए सिपाही भेजे।
33 यह देख कर यीशु ने कहा, “मैं और
थोड़ी देर तक तुम्हारे साथ हूँ उसके बाद
अपने भेजने वाले के पास चला जाऊँगा।
34 तुम मुझे ढूँढोगे, परन्तु नहीं पाओगे और
जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।”
35 यहूदियों ने आपस में कहा, “वह कहाँ
जाएँगे कि हम इन्हें ढूँढ न पाएँगे? क्या वह
उनके पास जाएँगे, जो यूनानियों में तित्तर
बित्तर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी
उपदेश देंगे? 36 उनके यह कहने का क्या
मतलब है कि तुम मुझे ढूँढोगे, परन्तु न
पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ
सकते?”
37 फिर त्यौहार के अन्तिम दिन, जो मुख्य
दिन है, यीशु खड़े हुए और उन्होंने पुकार
कर कहा, “यदि कोई प्यासा हो तो मेरे
पास आकर पिए। 38 जैसा बाइबल में आया
है, उसके अनुसार जो मुझ पर विश्वास
करेगा, उसके भीतर में से जीवन के जल की
नदियाँ बह निकलेंगी।” 39 यीशु ने ये शब्द
उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उन पर
विश्वास करने वाले पाने पर थे। आत्मा अब
तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक
अपनी महिमा को न पहुँचे थे।
40 तब भीड़ में से कुछ लोगों ने ये बातें सुन
कर कहा, “सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता
हैं।” 41 दूसरों ने कहा, “यह मसीह हैं।” परन्तु
किसी ने कहा, “क्यों? क्या मसीह गलील से
आएँगे? 42 क्या बाइबल में यह नहीं लिखा
है कि मसीह दाऊद के वंश से और बेतलेहम
गाँव से आएँगे जहाँ दाऊद रहता था ?”
43 तब उनके कारण लोगों में फूट पड़ी।
44 उन में से कई उन्हें पकड़ना चाहते थे,
परन्तु किसी ने उन पर हाथ न डाला। 45 तब
सिपाही महायाजकों और फ़रीसियों के पास
आए, और उन्होंने उन से कहा, “तुम उसे
क्यों नहीं लाए?”
46 सिपाहियों ने उत्तर दिया कि किसी
मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं की।
47 फ़रीसियों ने उनको उत्तर दिया, “क्या
तुम भी भरमाए गए हो? 48 क्या अधिकारियों
या फ़रीसियों में से किसी ने भी उन पर
विश्वास किया है? 49 परन्तु ये लोग जो
नियम-आज्ञाएँ नहीं जानते, दण्डित हैं।”
50 नीकुदेमुस ने[a], उन से कहा, 51 “क्या
हमारी व्यवस्था[b] किसी व्यक्ति को जब
तक पहले उसकी सुन कर जान न ले, कि
वह क्या करता है, दोषी ठहराती है?”
52 उन्होंने उसे जवाब दिया, “क्या तुम भी
गलील के हो? ढूँढो और देखो, कि गलील
से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का।”
53 तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए।

8 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गये,
2 और सवेरे फिर मन्दिर में आए। तब
सब लोग उनके पास आए, और वह बैठ कर
उन्हें उपदेश देने लगे।
3 फिर धर्म के ज्ञानी और फ़रीसी एक
महिला को लाए, जो अनुचित यौन सम्बन्ध
में पकड़ी गई थी, और उसको बीच में खड़ा
करके यीशु से कहा, 4 “गुरु, यह महिला
गैर- कानूनी यौन सम्बन्ध में पकड़ी गयी है।

[a] **7.50** जो पहले यीशु के पास आया था और उन में से एक था [b] **7.51** नियमशास्त्र

5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि
ऐसी महिलाओं को पत्थरवाह करें। आप इस
महिला के विषय में क्या कहते हैं?”
6 उन्होंने यीशु को परखने के लिए यह बात
कही थी, ताकि उन पर दोष लगाने के लिए
कोई मौका पाएँ। परन्तु यीशु झुक कर उँगली
से ज़मीन पर लिखने लगे।
7 जब वे उन से पूछते ही रहे, तो उन्होंने
सीधे होकर उन से कहा, “तुम में जो बेगुनाह
हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।” 8 वह
फिर झुक कर ज़मीन पर उँगली से लिखने
लगे।
9 परन्तु यह सुन कर सब के सब बड़ों से
लेकर छोटों तक सब के सब एक-एक करके
निकल गए, और यीशु अकेले रह गए। वह
महिला भी वहीं बीच में खड़ी थी। 10 यीशु ने
सीधे होकर उससे कहा, “वे सब कहाँ गए?
क्या किसी ने तुम पर सज़ा की आज्ञा न दी?”
11 उसने कहा, “प्रभु, किसी ने नहीं।” यीशु
ने कहा, “मैं भी तुम पर सज़ा की आज्ञा नहीं
देता। जाओ, और फिर गलत यौन रिश्ते में
मत रहना।”
12 एक बार यीशु ने फिर लोगों से कहा,
“जगत की रोशनी मैं हूँ, जो मेरे पीछे हो लेगा,
वह अन्धेरे में न चलेगा, परन्तु जीवन की
रोशनी पाएगा।”
13 फ़रीसियों ने उन से कहा, “आप अपनी
गवाही खुद ही देते हैं, आपकी गवाही ठीक
नहीं।”
14 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “हालांकि मैं
अपनी गवाही खुद देता हूँ, तौभी मेरी गवाही
ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ
से आया हूँ और कहाँ जाऊँगा। परन्तु तुम
नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ या कहाँ
जाऊँगा। 15 तुम मुँह देखा इन्साफ़ करते हो।
मैं किसी का इन्साफ़ नहीं करता। 16 और
यदि मैं इन्साफ़ करूँ भी, तो मेरा इन्साफ़
सच्चा है, क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूँ,
और पिता हैं जिन्होंने मुझे भेजा है। 17 तुम्हारी
धार्मिक पुस्तक में भी तो लिखा है कि दो
व्यक्तियों की गवाही मिल कर पक्की होती
है। 18 एक तो मैं खुद अपनी गवाही देता
हूँ, और दूसरी ओर पिता मेरी गवाही देते हैं
जिन्होंने मुझे भेजा है।”
19 उन्होंने यीशु से कहा, “आपके पिता
कहाँ हैं?” यीशु ने उत्तर दिया, “न तुम मुझे
जानते हो, न मेरे पिता को। यदि मुझे जानते,
तो मेरे पिता को भी जानते।”
20 ये बातें उन्होंने मन्दिर में उपदेश देते हुए
भण्डार घर में कहीं, परन्तु किसी ने उन्हें न
पकड़ा, क्योंकि उनका समय अब तक नहीं
आया था।
21 यीशु ने फिर उन लोगों से कहा, “मैं जाता
हूँ। तुम मुझे ढूँढोगे और बिना क्षमा हासिल
किये इस दुनिया से चल बसोगे। जहाँ मैं जाता
हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।”
22 यह सुन कर यहूदियों ने कहा, “क्या वह
खुद को मार डालेगा जो कहता है कि जहाँ
मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते हो?”
23 यीशु ने उन से कहा, “तुम पृथ्वी पर के
हो, मैं ऊपर का हूँ। तुम दुनिया के हो, मैं
दुनिया का नहीं। 24 इसलिए मैंने तुम से कहा
कि तुम बिना माफ़ी पाए चल बसोगे, क्योंकि
यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो
तम्हारे लिये कोई आशा नहीं है।”
25 उन्होंने यीशु से कहा, “आप कौन हैं?”
यीशु ने उन से कहा, “मैं वही हूँ जो शुरु से
तुम से कहता आया हूँ। 26 तुम्हारे बारे में मुझे
बहुत कुछ कहना और फ़ैसला लेना है। परन्तु
मेरे भेजने वाले पिता सच्चे हैं, और जो मैंने उन
से सुना है, वही दुनिया के लोगों से कहता
हूँ।”

27 वे न समझे कि यीशु हम से पिता के
विषय में कहते हैं।
28 तब यीशु ने कहा, “जब तुम मुझे ऊँचे पर
चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं ही मनुष्य का पुत्र
हूँ। मैं अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु
जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें
कहता हूँ। 29 मेरे पिता जिन्होंने मुझे भेजा है,
मेरे साथ हैं। उन्होंने मुझे अकेला नहीं छोड़ा,
क्योंकि मैं हमेशा वही काम करता हूँ, जिस
से वह खुश होते हैं।”
30 वह ये बातें कह ही रहे थे, कि कई लोगों
ने उन पर विश्वास किया।
31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन
पर विश्वास किया था, कहा, “यदि तुम
मेरी शिक्षा में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे
शिष्य ठहरोगे। 32 तुम सच्चाई को जानोगे,
और सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी।”
33 उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “हम तो
अब्राहम के वंश से हैं और कभी किसी के
गुलाम नहीं हुए। फिर आप कैसे कहते हैं कि
तुम आज़ाद हो जाओगे?”
34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ कि जो परमेश्वर द्वारा
ठहराई नैतिक सीमाओं को लाँघता करता
है, वह उसी का गुलाम है। 35 गुलाम सदा
घर में नहीं रहता, लेकिन पुत्र सदा रहता है।
36 इसलिए यदि पुत्र तुम्हें आज़ाद करेगा, तो
सचमुच तुम आज़ाद हो जाओगे। 37 मैं जानता
हूँ कि तुम अब्राहम के वंश से हो, तौभी मेरी
बातें तुम्हारे अन्दर मानो जगह नहीं पातीं,
इसलिए तुम मुझे मार डालना चाहते हो। 38 मैं
वही कहता हूँ जो मैंने अपने पिता के यहाँ
देखा है, और तुम वही करते रहते हो जो तुमने
अपने पिता से सुना है।”
39 उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “हमारा
पिता तो अब्राहम है।” यीशु ने उन से कहा,
“यदि तुम अब्राहम की सन्तान होते, तो
अब्राहम की तरह काम करते। 40 लेकिन तुम
मुझ को मार डालना चाहते हो, मैंने तुम्हें
वह सच्ची बातें बतायीं जो मैंने परमेश्वर से
सुनी, यह तो अब्राहम ने नहीं किया था।
41 तुम अपने पिता के समान काम करते हो।”
उन्होंने उन से कहा, “हम व्यभिचार से नहीं
जन्में। हमारा एक पिता है अर्थात् परमेश्वर।”
42 यीशु ने उन से कहा, “यदि परमेश्वर
तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते,
क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकल कर आया
हूँ”। मैं अपने आप से नहीं आया; परन्तु
परमेश्वर ने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरी बात
क्यों नहीं समझते? इसलिए कि मेरी बातें
सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने पिता शैतान से
हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा
करना चाहते हो। वह तो शुरुआत से खूनी
है। वह सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य
उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, तो
अपने स्वभाव ही से बोलता है, क्योंकि वह
झूठा है, वरन झूठ का पिता है। 45 परन्तु मैं तो
सच बोलता हूँ, इसीलिए तुम मेरा विश्वास
नहीं करते।
46 तुम में से कौन मुझे गुनाहगार ठहराता
है? यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा
विश्वास क्यों नहीं करते? 47 जो परमेश्वर
की ओर से होता है, वह परमेश्वर की बातें
सुनता है। परन्तु तुम इसलिए नहीं सुनते
क्योंकि परमेश्वर की तरफ़ से नहीं हो।”
48 यह सुन यहूदियों ने उन से कहा, “क्या
हम ठीक नहीं कहते हैं कि आप सामरी हैं,
और आप में दुष्टात्मा है?”

49 यीशु ने उत्तर दिया, “मुझ में दुष्टात्मा नहीं
है; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ,
और तुम मेरा निरादर करते हो। 50 परन्तु मैं
अपनी प्रतिष्ठा[a] नहीं चाहता हूँ, हाँ, एक तो है
जो चाहते हैं, और न्याय करते हैं। 51 मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति
मेरी बातों को मानेगा, तो वह अनन्त काल
तक मौत को न देखेगा।”
52 यहूदियों ने उन से कहा, “अब हम ने
जान लिया है कि आप में दुष्टात्मा है। अब्राहम
मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं।
लेकिन आप कहते हैं, कि यदि कोई मेरे
वचन पर चलेगा तो वह अनन्त काल तक
मौत का स्वाद न चखेगा। 53 हमारा पिता
अब्राहम तो मर गया और भविष्यद्वक्ता भी
मर गए। क्या आप उससे बड़े हैं? आप अपने
आपको क्या ठहराते हैं?”
54 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं खुद अपनी
महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं। जिन्हें
तुम अपने पिता होने का दावा करते हो वही
मेरी महिमा करने वाले मेरे पिता हैं। 55 तुमने
तो उन्हें नहीं जाना, परन्तु मैं उन्हें जानता हूँ।
अगर मैं कहूँ कि मैं उन्हें नहीं जानता तो मैं
भी तुम्हारे समान ही झूठा ठहरूँगा। लेकिन मैं
उन्हें जानता हूँ, और उनकी बातों को मानता
हूँ। 56 तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने
की आशा से बहुत मगन था, उसने देखा, और
खुश हुआ।”
57 यहूदियों ने उन से कहा, “अब तक आप
पचास साल के नहीं हुए, फिर भी कहते हैं
आपने अब्राहम को देखा है?”
58 यीशु ने उन से कहा, “मैं तुम से सच-सच
कहता हूँ कि इसके पहले कि अब्राहम उत्पन्न
हुआ, मैं हूँ।”
59 तब उन्होंने यीशु को मारने के लिए
पत्थर उठाए, लेकिन यीशु छिपकर मन्दिर
से निकल गए।

9 एक बार यीशु और उनके शिष्यों ने एक
अन्धे आदमी को देखा।
2 उसे देख कर उनके शिष्यों ने उन से पूछा,
“गुरू, यह मनुष्य अन्धा क्यों जन्मा है?क्या
इसलिये कि इसके इसके माता-पिता से कोई
चूक हुई?”
3 यीशु ने उत्तर दिया, “इसलिये नहीं कि
इसके माता-पिता कहीं चूक गये,परन्तु यह
इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें
प्रगट हों। 4 जिस परमेश्वर ने मुझे भेजा है
उनके काम हमें दिन ही दिन में करना ज़रूरी
है। वह रात आने वाली है जिस में कोई काम
नहीं कर सकता। 5 जब तक मैं जगत में हूँ,
तब तक जगत की ज्योति हूँ।”
6 यह कह कर उन्होंने भूमि पर थूका और
उस थूक से मिट्टी सानी। उस मिट्टी को लेकर
उस अन्धे की आँखों पर लगा कर, यीशु ने
7 उससे कहा, “जाओ, शीलोह के तालाब में
धो लो”[b]। तब उसने वैसा ही किया, और
देखता हुआ लौट आया।
8 तब पड़ोसी और जिन्होंने पहले उसे भीख
माँगते देखा था, कहने लगे, “क्या यह वही
नहीं, जो बैठ कर भीख माँगा करता था?”
9 कितनों ने कहा, “यह वही है।” दूसरों ने
कहा, “नहीं” किन्तु यह उसके समान है।”
उसने कहा, “मैं वही हूँ।”
10 तब वे उससे पूछने लगे, “तुम्हारी आँखें
कैसे खुल गईं?”
11 उसने उत्तर दिया, “यीशु नामक एक
व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आँखों पर

[a] **8.50** बड़ाई, नाम [b] **9.7** जिस का अर्थ ‘भेजा हुआ’ है

लगा कर मुझ से कहा कि शीलोह में जाकर धो लो। मैंने वैसा ही किया और देखने लगा हूँ।"
12 उन लोगों ने उससे पूछा, "वह कहाँ हैं?"
उसने कहा, "मैं नहीं जानता।"
13 तब लोग उस व्यक्ति को जो पहले
अन्धा था, फ़रीसियों के पास ले गए। 14 जिस
दिन यीशु ने उसकी आँखों को ठीक किया
था, वह सब्त का दिन था।
15 फिर फ़रीसियों ने भी उससे पूछा,
"तुम्हारी आँखें कैसे खुल गयीं?" उसने उन
से कहा, "उस व्यक्ति ने मेरी आँखों पर
मिट्टी लगाई, फिर मैंने धो लिया, और अब
देखने लगा हूँ।"
16 यह सुन कर कई फ़रीसी कहने लगे,
"यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं,
क्योंकि वह सब्त के दिन का पालन नहीं
करता।" दूसरों ने कहा, "परमेस्वर का
विरोधी कैसे इस तरह के चिन्ह दिखा सकता
है?" इस वजह से उन में फूट पड़ गयी।
17 उन लोगों ने उस व्यक्ति से कहा, "जिस
ने तुम्हारी आँखें खोली, उनके बारे में तुम क्या
कहते हो?" उसने कहा, "वह भविष्यद्वक्ता
हैं।"
18 जिस व्यक्ति की आँखें खुल गईं थीं,
यहूदियों ने उसके माता-पिता को बुलाकर
उसके अन्धेपन के बारे में पूछा। जब उन्होंने
उन लोगों को यह बताया कि वह अन्धा
ही जन्मा था, तब उन्हें विश्वास न हुआ।
19 उन्होंने उन से पूछा, "अब वह कैसे देखने
लगा है?"
20 उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, "हम तो
जानते हैं कि हमारा बेटा अन्धा जन्मा था।
21 परन्तु हम यह नहीं जानते कि अब वह
कैसे देखने लगा है, और न यह जानते हैं कि
किस ने उसकी आँखें खोलीं। वह सयाना है,
उसी से पूछ लीजिए। वह अपने विषय में खुद
ही बता देगा।"
22 ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिए
कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे। वे
यहूदी आपस में एक मत हो चुके थे कि
यदि कोई कहे कि यीशु, मसीह हैं, तो उसे
आराधनालय से निकाला जाएगा। 23 इसी
कारण उसके माता-पिता ने कहा कि वह
सयाना है, उसी से पूछ लीजिए।
24 तब उन्होंने उस मनुष्य को जो अन्धा था
दूसरी बार बुलाकर उससे कहा, "परमेश्वर
की बड़ाई करो। हम तो जानते हैं कि वह
आदमी दुष्ट है।"
25 उसने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि
वह दुष्ट है या नहीं। मैं एक बात जानता हूँ
कि मैं अन्धा था और अब देखने लगा हूँ।"
26 उन्होंने उससे फिर कहा, "उसने तुम्हारे
साथ क्या किया? और तुम्हारी आँखें कैसे
खोलीं?"
27 उसने उन से कहा, "मैं तो तुम से कह
चुका, और तुमने न सुना। फिर दूसरी बार
क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उनके
शिष्य होना चाहते हो?"
28 तब वे उसे बुरा-भला कह कर बोले,
"तुम ही उसके शिष्य हो, हम तो मूसा के
शिष्य हैं। 29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने
मूसा से बातें की परन्तु इस मनुष्य को नहीं
जानते कि कहाँ से आया है।"
30 उसने उनको उत्तर दिया, "यह तो अचम्भे
की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ
के हैं, तौभी उन्होंने मेरी आँखें खोल दीं।
31 हम जानते हैं कि परमेश्वर गलत चाल
चलने वालों की नहीं सुनते। परन्तु यदि कोई
परमेश्वर की राह पर चलता हो , तो वह
उसकी सुनते हैं। 32 जगत की शुरुवात से यह
कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी

जन्म के अन्धे की आँखें खोली हों। 33 यदि
यह इन्सान परमेश्वर की ओर से न होता, तो
कुछ भी नहीं कर सकता।”
34 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “तुम्हारा
जन्म तो अपराध में हुआ है, तुम हमें क्या
सिखाते हो?” और उन्होंने उसे बाहर निकाल
दिया।
35 यीशु ने सुना कि उन लोगों ने उसे बाहर
निकाल दिया है। जब उससे मुलाकात हुई तो
यीशु ने कहा, “क्या जो परमेश्वर देह में आए
हैं, उन पर विश्वास करते हो?”
36 उसने उत्तर दिया, “प्रभु, वह कौन हैं कि
मैं उन पर विश्वास करूँ?”
37 यीशु ने उससे कहा, “तुमने उसे देखा है,
और जो तुम्हारे साथ बातें कर रहा है, वही
है।”
38 उसने कहा, “प्रभु, मैं विश्वास करता
हूँ।” और उसने यीशु को दंडवत् किया।
39 तब यीशु ने कहा, “मैं इस जगत में न्याय
के लिए आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे
देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएँ।”
40 जो फ़रीसी उनके साथ थे, उन्होंने ये बातें
सुन कर उन से कहा, “क्या हम भी अन्धे
हैं?”
41 यीशु ने उन से कहा, “यदि तुम अन्धे
होते तो अपराधी न ठहरते, परन्तु तुम कहते
हो कि हम देखते हैं, इसलिए तुम्हारा अपराध
बना रहता है।”

10 “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि
जो कोई दरवाज़े से भेड़शाला में
प्रवेश नहीं करता, परन्तु दूसरे किसी रास्ते
से प्रवेश करता है, वह चोर और डाकू है।
2 लेकिन जो दरवाज़े से भीतर प्रवेश करता
है, वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 उसके लिए
द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसकी
आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम
ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।
4 वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल
लेता है, और उनके आगे आगे चलता है,
और भेड़ें उसके पीछे चलती हैं, क्योंकि
वे उसकी आवाज़ पहचानती हैं। 5 वे पराये
व्यक्ति के पीछे नहीं जाएँगी, लेकिन उससे
भागेंगी, क्योंकि वे अजनबी की आवाज़ नहीं
पहचानती हैं।”
6 यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे
न समझे कि वह उन से क्या कहना चाहते
हैं। 7 तब यीशु ने उन से फिर कहा, “मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ कि भेड़ों का ढरवाज़ा
मैं हूँ। 8 जितने मुझ से पहले आए, वे सब चोर
और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी।
9 द्वार में हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश
करेगा तो मुक्ति पाएगा और भीतर बाहर
आया जाया करेगा और चारा पाएगा। 10 चोर
किसी और काम के लिए नहीं, लेकिन केवल
चोरी करने और घात करने और नाश करने
के लिए आता है। मैं इसलिए आया कि वे
जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।
11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ, अच्छा चरवाहा
भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मजदूर
जो न चरवाहा है, न भेड़ों का मालिक है,
भेड़िए को आते हुए देख भेड़ों को छोड़कर
भाग जाता है। भेड़िया उन्हें पकड़ता और
तित्तर-बित्तर कर देता है। 13 वह इसलिए भाग
जाता है कि वह मजदूर है। उसे भेड़ों की
फ़िक्र नहीं होती है। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ।
जिस तरह पिता मुझे जानते हैं, उसी तरह में
पिता को जानता हूँ। 15 मैं अपनी भेड़ों को

भी उसी तरह जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं। मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ।
16 मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं। मुझे उनको भी लाना ज़रूरी है। वे मेरा आवाज़ सुनेंगी, तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा। 17 पिता इसलिए मुझ से प्रेम रखते हैं क्योंकि मैं अपना प्राण देता हूँ, ताकि उसे फिर ले लूँ। 18 कोई मेरा प्राण मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे खुद ही देता हूँ। मुझे उसे देने का भी अधिकार है, और उसे वापस लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।
19 इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी। 20 उन में से बहुत से लोग कहने लगे कि यीशु में दुष्टात्मा है, और वह पागल है। उसकी क्यों सुनते हो? 21 अन्य लोगों ने कहा, "ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा हो। क्या दुष्टात्मा अन्धों की आँखें खोल सकती है?
22 यरूशलेम में समर्पण-पर्व हुआ, और जाड़े की ऋतु थी। 23 यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहे थे।
24 तब यहूदियों ने उन्हें आकर घेर लिया और पूछा, "आप हमें कब तक दुविधा में रखेंगे? यदि आप मसीह हैं, तो हमसे साफ़ कह दें।"
25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुम से कह चुका हूँ, लेकिन तुम मानते ही नहीं। जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं। 26 तुम इसलिए विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरी बातें मानती हैं। 28 मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी बर्बाद न होंगी, न ही कोई उन्हें मेरे हाथों से छीन लेगा। 29 मेरे पिता ने उन्हें मुझ को दिया है। मेरे पिता सब से बड़े हैं। कोई उन्हें पिता के हाथों से छीन नहीं सकता। 30 मैं और पिता एक हैं।"
31 यह सुन कर यहूदियों ने यीशु को पत्थरवाह करने के लिए फिर पत्थर उठाए।
32 तब यीशु ने उन से कहा, "मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिए तुम मुझे पत्थर मारते हो?"
33 यहूदियों ने उन्हें उत्तर दिया, "भले काम के लिए हम आपको पत्थरवाह नहीं करते, लेकिन परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिए कि आप मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बनाते हैं।"
34 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम्हारी धार्मिक किताब में नहीं लिखा है कि मैंने कहा, तुम ईश्वर हो? 35 परमेश्वर ने उन्हें ईश्वर कहा, जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुँचा[a], 36 और जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, उससे तुम कहते हो कि तुम निन्दा करते हो। क्योंकि मैंने कहा, कि 'मैं परमेश्वर का बेटा हूँ।' 37 यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो। 38 परन्तु यदि में करता हूँ, तो चाहे मेरा विश्वास न भी करो, लेकिन उनकामों पर विश्वास करो, ताकि तुम जानो, और समझो कि पिता मुझ में हैं, और मैं पिता में हूँ।"
39 तब उन्होंने फिर यीशु को पकड़ने की कोशिश की, परन्तु वह उनके हाथ से निकल गए। 40 उसके बाद वह यरदन के पार उस स्थान पर चले गये, जहाँ यूहन्ना पहले बपतिस्मा दिया करता था, और वहीं रहे।

[a] **10.35** और पवित्र बाइबल की बात टल नहीं सकती

41 कई लोग उनके पास आकर कहते थे
कि यूहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया,
परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने यीशु के विषय में
कहा था, वह सब सच था। 42 और वहाँ बहुत
से लोगों ने यीशु पर विश्वास किया।

11 मरियम और उसकी बहन मार्था के
गाँव बैतनिय्याह का लाज़र नाम का
एक आदमी बीमार था। 2 यह वही मरियम
थी जिस ने प्रभु पर इत्र डाल कर उनके पाँवों
को अपने बालों से पोछा था। लाज़र इसी का
भाई था।
3 इसलिए उसकी बहनों ने यीशु को कहला
भेजा, "प्रभु, जिस से आप प्यार करते हैं, वह
बीमार है।"
4 यह सुन कर यीशु ने कहा, "यह बीमारी
मौत की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के
लिए है, ताकि उसके द्वारा परमेश्वर के बेटे
की महिमा हो।"
5 यीशु मार्था, उसकी बहन मरियम और
लाज़र से प्रेम रखते थे। 6 इसलिए जब उन्होंने
सुना कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह
थे, वहाँ दो दिन और ठहर गये।
7 इसके बाद यीशु ने शिष्यों से कहा,
"आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।"
8 शिष्यों ने उन से कहा, "गुरु जी, अभी तो
यहूदी आपको पत्थरवाह करना चाहते थे।
क्या आप फिर भी वहीं जाना चाहते हैं?"
9 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन के बारह
घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले तो
ठोकर नहीं खाता। क्योंकि इस जगत की
रोशनी को देखता है। 10 लेकिन यदि कोई
रात में चलता है, तो ठोकर खाता है, क्योंकि
उसमें रोशनी नहीं।"
11 यीशु ने ये बातें कहीं और इसके बाद उन
से कहने लगे, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया
है, परन्तु मैं उसे जगाने जा रहा हूँ।"
12 तब शिष्यों ने उन से कहा, "प्रभु, यदि
वह सो गया है, तो उठ जायेगा।"
13 यीशु ने उसकी मौत के बारे में कहा था,
परन्तु वे समझे कि उन्होंने लाज़र के नींद में
होने के बारे में कहा है।
14 तब यीशु ने उन से साफ़ कह दिया,
"लाज़र मर गया है। 15 मैं तुम्हारे कारण खुश
हूँ कि मैं वहाँ न था जिस से तुम विश्वास
करो। अब आओ, हम उसके पास चलें।"
16 तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है,
अपने साथ के शिष्यों से कहा, "आओ,
हम भी उनके साथ मरने को चलें।" 17 वहाँ
आकर यीशु को यह मालूम हुआ कि लाज़र
को कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
18 बैतनिय्याह यरूशलेम के पास कोई दो
मील की दूरी पर था। 19 बहुत से यहूदी मार्था
और मरियम के पास उनके भाई के बारे में
शान्ति देने के लिए आए थे। 20 इसलिए मार्था
यीशु के आने की खबर सुन कर उन से भेंट
करने के लिए गई, परन्तु मरियम घर में बैठी
रही।
21 मार्था ने यीशु से कहा, "प्रभु, यदि आप
यहाँ होते, तो मेरा भाई कभी न मरता।
22 और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ
आप परमेश्वर से माँगेंगे, परमेश्वर आपको
देंगे।"
23 यीशु ने उससे कहा, "तुम्हारा भाई जी
उठेगा।"
24 मार्था ने उन से कहा, "मैं जानती हूँ कि
अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी
उठेगा।"

25 यीशु ने उससे कहा, “पुनरुत्थान और
जीवन में ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास
करता है वह अगर मर भी जाए, तौभी
जिएगा। 26 जो कोई जीवित है, और मुझ पर
विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न
मरेगा। क्या तुम इस बात पर विश्वास करती
हो?”
27 मार्था ने उससे कहा, “हाँ प्रभु, मैं ईमान
ला चुकी हूँ कि परमेश्वर के बेटे मसीह जो
जगत में आने वाले थे, वह आप ही हैं।”
28 यह कह कर वह चली गई और अपनी
बहन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा,
“गुरु यहीं हैं, और तुम्हें बुलाते हैं।”
29 यह सुनते ही मरियम तुरन्त उठ कर यीशु
के पास आई। 30 a। 31 कुछ यहूदी मरियम
के साथ घर में थे और उसे तसल्ली दे रहे थे।
उन्होंने देखा कि मरियम तुरन्त उठ कर बाहर
गई है, और यह समझ कर कि वह कब्र पर
रोने के लिए जाती है, उसके पीछे चल पड़े।
32 जब मरियम वहाँ यीशु के पास पहुँची तो
उन्हें देखते ही उनके पाँवों पर गिर कर उसने
कहा, “प्रभु, यदि आप यहाँ होते तो मेरा भाई
न मरता।”
33 जब यीशु ने उसको और उन यहूदियों
को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा,
तो आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल
होकर कहा, “तुमने उसे कहाँ रखा है?”
34 उन्होंने यीशु से कहा, “प्रभु, चल कर देख
लीजिए।”
35 यीशु के आँसू बहने लगे।
36 तब यहूदी कहने लगे, “देखो, वह लाज़र
से कैसा प्रेम करते थे!”
37 परन्तु उन में से कितनों ने कहा, “क्या
यह जिन्होंने अन्धे की आँखें खोलीं, वह
ऐसा कुछ न कर सके जिस से यह मनुष्य
न मरता?”
38 यीशु मन में बहुत ही दुखी होकर कब्र
पर आए। वह एक गुफ़ा थी, और एक पत्थर
उस पर धरा था।
39 यीशु ने कहा, “पत्थर को हटाओ।”
मृतक की बहन मार्था उन से कहने लगी,
“प्रभु, उस में से अब तो बदबू आती होगी,
क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए हैं।”
40 यीशु ने उससे कहा, “क्या मैंने तुम से न
कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगी, तो
परमेश्वर के काम को देखोगी?”
41 तब उन लोगों ने उस पत्थर को हटाया।
फिर यीशु ने आँखें उठा कर कहा, “पिताजी,
मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मेरी
सुन ली है। 42 मैं जानता था कि आप सदा मेरी
सुनते हैं, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है,
उसके कारण मैंने यह कहा, जिस से कि लोग
विश्वास करें, कि आपने मुझे भेजा है।”
43 यह कह कर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारा,
“लाज़र, निकल आओ।”
44 यह सुन कर जो मर गया था, वह हाथ
पाँव बन्धे हुए निकल आया। उसका मुँह
अँगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उन से
कहा, “उसके बन्धन खोल दो और उसे जाने
दो।”
45 तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे,
और जिन्होंने यीशु का यह काम देखा था,
उन में से कई लोगों ने उन पर विश्वास
किया। 46 परन्तु उन में से कितनों ने फ़रीसियों
के पास जाकर यीशु के कामों की खबर
दी। 47 इस पर महायाजकों और फ़रीसियों ने
मुख्य सभा के लोगों को इकट्ठा करके कहा,
“हम करते क्या हैं? यह आदमी तो बहुत

[a] **11.30** यीशु अभी गाँव में नहीं पहुँचे थे, लेकिन उसी जगह में थे, जहाँ मार्था ने उन से भेंट की थी

चिन्ह दिखाता है। 48 अगर हम उसे यों ही
छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएँगे
और रोमी आकर हमारी जगह और लोगों पर
अधिकार कर लेंगे।”
49 तब उन में से काइफ़ा नामक व्यक्ति ने
जो उस वर्ष का पुरोहित था, उन से कहा,
“तुम कुछ नहीं जानते, 50 और न यह सोचते
हो कि तुम्हारे लिए यह भला है कि हमारे
लोगों के लिए एक मनुष्य मरे, बजाए इसके
कि देश राष्ट्र का नाश हो।”
51 यह बात उसने अपनी ओर से न कही,
परन्तु उस साल का महायाजक[a] होने के नाते
भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस देश के लिए
मरेंगे। 52 न केवल उस देश के लिए, लेकिन
इसलिए भी, कि परमेश्वर की तित्तर-बित्तर
सन्तानों को एक कर दें। 53 उसी दिन से वे
यीशु को मार डालने की साजिश करने लगे।
54 इसलिए यीशु उस समय से यहूदियों में
खुले में दिखाई नहीं दिए, परन्तु वहाँ से जंगल
के पास के देश में इफ़्राईम नामक एक नगर
को चले गए। वह अपने शिष्यों के साथ वहीं
रहने लगे।
55 यहूदियों का फ़सह का पर्व निकट था,
और बहुत से लोग फ़सह से पहले गाँव
से यरूशलेम गए कि अपने आप को शुद्ध
करें। 56 वे यीशु को ढूँढने और मन्दिर में
खड़े होकर आपस में कहने लगे, “तुम क्या
समझते हो? क्या वह पर्व में नहीं आएँगे?”
57 महायाजकों और फ़रीसियों ने भी आज्ञा
दे रखी थी, कि यदि कोई यह जानता है कि
यीशु कहाँ हैं तो बता दे, ताकि उन्हें पकड़
लिया जाए।

12 फिर यीशु फ़सह से छः दिन पहले
बैतनिय्याह आए, जहाँ लाज़र था।
इसी लाज़र को यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया
था। 2 वहाँ उन लोगों ने यीशु के लिए खाना
तैयार किया, और मार्था सेवा कर रही थी,
लाज़र उन में से एक था, जो यीशु के साथ
खाना खाने के लिए बैठे थे। 3 तब मरियम
ने जटामांसी का कीमती करीब आधा लीटर
इत्र लेकर यीशु के पाँवों पर उण्डेला, और
अपने बालों से उनके पाँव पोछे। इत्र की
खुशबू से सारा घर भर गया।
4 लेकिन उनके शिष्यों में से यहूदा
इस्करियोती नामक एक शिष्य जो उन्हें
पकड़वाना चाहता था, कहने लगा, 5 “यह
इत्र तीन सौ चाँदी के सिक्कों में बेच कर गरीबों
को क्यों न दिया गया?”
6 उसने यह बात इसलिए न कही, कि उसे
गरीबों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिए कि
वह चोर था लेकिन उसके पास उनकी थैली
रहती थी, और उसमें जो कुछ डाला जाता
था, वह निकाल लेता था।
7 यीशु ने कहा, “उसे रहने दो। उसने मेरे
गाड़े जाने के दिन के लिए यह किया है।
8 क्योंकि गरीब तो तुम्हारे साथ सदा रहते
हैं, लेकिन मैं तुम्हारे साथ हमेशा न रहूँगा।”
9 यहूदियों में से साधारण लोग जान गए कि
यीशु वहाँ हैं, और लोग न केवल यीशु के
कारण आए, लेकिन इसलिए भी कि लाज़र
को देखें, जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया
था। 10 तब महायाजकों ने लाज़र को भी मार
डालने की योजना बनायी। 11 क्योंकि उसके
कारण बहुत से यहूदी यीशु पर विश्वास करने
लगे।
12 दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो त्यौहार
में आए थे, यह सुन कर कि यीशु यरुशलेम
में आने वाले हैं, 13 खजूर की डालियाँ लीं,
और उन से भेंट करने निकले। वे पुकारने

[a] **11.51** महापुरोहित

लगे, “होसन्ना, धन्य इस्राएल के राजा, जो
प्रभु के नाम से आते हैं!” 14 यीशु को एक
गधे का बच्चा मिला, और वह उस पर बैठ
गए। 15 जैसा लिखा है, “सिय्योन की बेटी,[a]
मत डरो, देखो, तुम्हारे राजा गधे के बच्चे पर
बैठ कर चले आते हैं!”
16 उनके शिष्य, ये बातें पहले न समझे थे,
परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई, तो
उनको याद आया कि ये बातें उनके बारे में
लिखी हुई थीं, और लोगों ने उन से इस तरह
का बर्ताव किया था। 17 तब भीड़ के लोगों
ने जो उस समय यीशु के साथ थे, यह गवाही
दी कि उन्होंने लाज़र को कब्र में से बुलाकर
मरे हुओं में से जिलाया था। 18 इसी कारण
लोग उन से भेंट करने को आए थे, क्योंकि
उन्होंने सुना था कि यीशु ने यह आश्चर्यकर्म
दिखाया है।
19 तब फ़रीसियों ने आपस में कहा, “सोचो
तो सही कि तुम कुछ भी नहीं कर पा रहे हो।
देखो, संसार यीशु को मानने लगा है।”
20 जो लोग उस पर्व में भजन करने आए थे
उन में से कई यूनानी थे। 21 उन्होंने गलील
के बैतसैदा के रहने वाले फ़िलिप्पुस के पास
आकर उससे बिनती की, “श्रीमान, हम यीशु
से मुलाकात करना चाहते हैं।”
22 फ़िलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास को
बताया, तब अन्द्रियास और फ़िलिप्पुस ने
यीशु को।
23 तब यीशु ने उन लोगों से कहा, “वह
समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र की मेरी
महिमा हो। 24 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ,
कि जब तक गेहूँ का दाना मिट्टी में पड़कर
मर नहीं जाता, तब तक वह अकेला रहता
है। जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।
25 जो अपने जीवन को प्रिय जानता है वह
उसे खो देता है। जो इस जगत में अपने जीवन
को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के
लिए उसकी रक्षा करेगा। 26 यदि कोई मेरी
सेवा करे, तो मेरे पीछे चल पड़े, और जहाँ
मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। अगर कोई
मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेंगे।
27 अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए
अब मैं क्या कहूँ? 28 पिता, मुझे इस घड़ी से
बचाईए। परन्तु मैं तो इसी कारण इस समय
तक पहुँचा हूँ। पिता, अपने नाम की महिमा
कीजिए।” तब यह आकाशवाणी हुई, “मैंने
उसकी महिमा की है, और फिर भी करूँगा।”
29 तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्होंने
कहा कि बादल गरजा, दूसरों ने कहा, “कोई
स्वर्गदूत उन से बोला।”
30 इस पर यीशु ने कहा, “यह शब्द मेरे लिए
नहीं, परन्तु तुम्हारे लिए आया है। 31 अब
इस जगत का न्याय होता है। इस जगत का
अधिकारी निकाल दिया जाएगा। 32 यदि मैं
पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब
को अपने पास खीचूँगा।”
33 ऐसा कह कर उन्होंने यह बतला दिया,
कि वह कैसी मौत से मरेंगे।
34 यह सुन कर लोगों ने उन से कहा, “हम
ने मज़हब की यह बात सुनी है, कि मसीह
हमेशा रहेंगे, फिर आप क्यों कहते हैं कि
मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना
ज़रूरी है? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?”
35 यीशु ने उन से कहा, “ज्योति अब थोड़ी
देर तक तुम्हारे बीच में है। 36 जब तक ज्योति
तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो, ऐसा न हो
कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे। जो अन्धकार में
चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता
है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति
पर विश्वास करो कि तुम ज्योति की सन्तान

[a] **12.15** इस्राएली लोग

हो जाओ।" ये बातें कह कर यीशु चले गये और उन से छिपे रहे।

37 यीशु ने उन लोगों के सामने इतने चिन्ह
दिखाए, तौभी उन्होंने उन पर विश्वास न
किया, 38 ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का
वह वचन पूरा हो जो उसने कहा, "प्रभु, हमारे
समाचार को किस ने माना है? और प्रभु का
भुजबल किस पर प्रगट हुआ?"
39 इस कारण वे विश्वास न कर सके,
क्योंकि यशायाह ने फिर कहा,
40 कि उसने उनकी आँखें अन्धी, और
उनका मन कठोर किया है, कहीं ऐसा न हो,
कि वे आँखों से देखें, मन से समझें, मुड़ें और
मैं उन्हें ठीक करूँ।
41 यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि
उसने यीशु की महिमा देखी थी, और उसने
उनके विषय में बातें की थीं।
42 फिर भी अधिकारियों में से भी कई
लोगों ने उन पर विश्वास किया, लेकिन
फ़रीसियों के कारण खुले आम नहीं मानते
थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले
जाएँ। 43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको
परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती
थी।
44 यीशु ने पुकार कर कहा, "जो मुझ पर
भरोसा करता है, वह मुझ पर नहीं, बल्कि
मेरे भेजने वाले परमेश्वर पर भरोसा करता
है। 45 जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजने
वाले परमेश्वर को देखता है। 46 मैं जगत
में ज्योति बन कर आया हूँ ताकि जो कोई
मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न
रहे। 47 यदि कोई मेरी बातें सुन कर न माने,
तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता। क्योंकि मैं
दुनिया को दोषी ठहराने के लिए नहीं, परन्तु
इसका उद्धार करने के लिए आया हूँ। 48 जो
मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें स्वीकार
नहीं करता है, उसको दोषी ठहराने वाला
तो एक है: अर्थात् वचन, जो मैंने कहा है।
वही आखिरी दिन में उसे दोषी ठहराएगा।
49 क्योंकि ये बातें मैंने अपनी ओर से नहीं
कहीं, लेकिन पिता जिन्होंने मुझे भेजा और
आज्ञा दी है कि मैं क्या-क्या कहूँ। 50 मैं
जानता हूँ कि पिता की आज्ञा हमेशा की
ज़िन्दगी[a] है। इसलिए मैं वैसा ही बोलता हूँ
जैसा पिता ने मुझ से कहा है।"

13 फ़सह के उत्सव से पहले यीशु ने
जान लिया, कि मेरा वह समय आ
पहुँचा है कि मैं दुनिया को छोड़कर पिता
के पास जाऊँ। तब वह अपने लोगों से जो
दुनिया में थे जैसा प्रेम करते थे, वैसा ही प्रेम
अन्त तक करते रहे। 2 भोजन के अन्त में
शैतान शमौन के बेटे यहूदा इस्करियोती के
मन में यीशु को पकड़वाने का विचार डाल
चुका था। 3 तब यीशु इस आश्वासन के
साथ कि परमेश्वर पिता ने सब कुछ उनके
हाथों कर दिया है और वह परमेश्वर के पास
से आए हैं और परमेश्वर के पास जाने वाले
हैं, 4 यीशु खाने पर से उठे और उन्होंने अपना
चोगा उतार कर दिया अँगोछे से अपनी कमर
बान्धी।
5 फिर बर्तन में पानी भर कर शिष्यों के पाँव
धोने और उसी अँगोछे से पोंछने लगे।
6 जब वह शमौन पतरस के पास आए, तब
उसने उन से कहा, "प्रभु, "क्या आप मेरे पाँव
धोना चाहते हैं?"

[a] **12.50** अनन्त जीवन

7 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “जो मैं करता
हूँ, उसे तुम नहीं जानते, परन्तु कुछ समय
बाद समझोगे।”
8 पतरस ने उन से कहा, “मैं आपको अपने
पाँव कभी न धोने दूँगा। यह सुन कर यीशु ने
उससे कहा, “अगर मैं तुम्हें न धोऊँ, तो मेरा
तुम्हारे साथ कोई नाता नहीं।”
9 शमौन पतरस ने उन से कहा, “प्रभु, तो
मेरे पाँव ही नहीं, बल्कि हाथ और सिर भी
धो दीजिए।”
10 यीशु ने उससे कहा, “जो नहा चुका है,
उसे पाँव के सिवाय और कुछ धोने की
ज़रूरत नहीं, वह बिलकुल साफ़ है। और
तुम लोग साफ़ हो, परन्तु सब के सब नहीं।”
11 यीशु अपने पकड़वाने वाले को जानते थे,
इसीलिए उन्होंने कहा, “तुम सब के सब
नहीं।”
12 जब वह उनके पाँव धो चुके तो उन्होंने
अपना चोगा पहना और फिर बैठ गये। वह
उन से कहने लगे, “क्या तुम समझे कि मैंने
तुम्हारे साथ क्या किया? 13 तुम मुझे गुरु
कहते हो, प्रभु कहते हो, ठीक करते हो,
क्योंकि मैं वही हूँ। 14 यदि मैंने प्रभु और गुरु
होकर भी तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक
दूसरे के पाँव धोने चाहिए। 15 क्योंकि मैंने
तुम्हारे सामने नमूना रखा है, ताकि जैसा मैंने
तुम्हारे साथ किया है, वैसा ही तुम भी किया
करो।
16 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, दास अपने
स्वामी से बड़ा नहीं, और न भेजा हुआ अपने
भेजने वाले से। 17 तुम तो ये बातें जानते हो,
यदि उन पर चलो तो आशीषित हो। 18 मैं
तुम सब के विषय में नहीं कहता। जिन्हें मैंने
चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ। परन्तु ऐसा
इसलिए हुआ कि पवित्रशास्त्र[a] की यह बात
पूरी हो कि जो मेरी रोटी खाता है, उसी ने मुझ
पर लात उठाई। 19 अब मैं ऐसा होने से पहले
तुम्हें सावधान करता हूँ ताकि जब ऐसा हो,
तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।
20 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मेरे
भेजे हुए को अपनाता है, वह मुझे अपनाता
है, और जो मुझे अपनाता है, वह मेरे भेजने
वाले को भी अपनाता है।”
21 ये बातें कह कर यीशु आत्मा में बेचैन
हुए और उन्होंने यह गवाही दी कि मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ, कि तुम में से एक मुझे
पकड़वाएगा।
22 शिष्य यह शक करते हुए कि वह किस
के बारे में ऐसा कहते हैं, एक दूसरे की ओर
देखने लगे। 23 यीशु के शिष्यों में से एक, जिस
से वह प्रेम करते थे, उनके सीने की ओर
झुका हुआ बैठा था। 24 तब शमौन पतरस
ने उसकी ओर इशारा करके कहा, “कि वह
प्रभु से पूछे किस के बारे में कह रहे हैं।”
25 तब उसने उसी तरह यीशु के सीने की ओर
झुक के पूछा, “प्रभु, वह कौन है?” यीशु ने
उत्तर दिया, “जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा
डुबो कर दूँगा, वही है।”
26 तब उन्होंने टुकड़ा डुबो कर शमौन के
पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया।
27 टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया।
तब यीशु ने उससे कहा, “जो तुम करते हो,
जल्दी करो।”
28 परन्तु बैठने वालों में से किसी ने न जाना
कि उन्होंने यह बात उससे किस लिए कही।
29 यहूदा के पास थैली रहती थी, इसलिए

[a] **13.18** बाइबल

कुछ लोगों ने समझा कि यीशु उससे कह रहे
हैं कि जो कुछ हमें त्यौहार के लिए चाहिए
वह मोल ले, या गरीबों को कुछ दे दे।
30 तब वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला
गया, और वह रात का समय था।
31 जब वह बाहर चला गया तो यीशु
ने[a] कहा, मनुष्य के बेटे की महिमा हुई,
और परमेश्वर की महिमा भी उसमें हुई।
32 परमेश्वर पिता भी अपने में उसकी महिमा
करेंगे, बल्कि तुरन्त करेंगे। 33 हे बच्चो, मैं
और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ, तुम मुझे
ढूँढोगे, और जैसा मैंने यहूदियों से कहा, 'जहाँ
मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते, वैसे ही
मैं अब तुम से भी कहता हूँ।'
34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक
दूसरे से प्रेम रखो। जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा
है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।
35 यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी के द्वारा
सब जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।"
36 शमौन पतरस ने उन से कहा, "प्रभु, आप
कहाँ जाते हैं?" यीशु ने उत्तर दिया, "जहाँ
में जाता हूँ वहाँ अभी तुम मेरे पीछे आ नहीं
सकते, परन्तु इसके बाद मेरे पीछे आओगे।"
37 पतरस ने उन से कहा, "हे प्रभु, मैं अभी
आपके पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो
आपके लिए अपनी जान तक दे दूँगा।"
38 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तुम मेरे लिए
अपनी जान दोगे? मैं तुम से सच-सच कहता
हूँ कि मुर्गे के बाँग देने के पहिले तुम तीन बार
मेरा इन्कार करोगे।"

14 "तुम्हारा मन न घबराए, तुम
परमेश्वर पर भरोसा रखते हो, मुझ
पर भी भरोसा रखो।
2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान
हैं। यदि वे न होते तो मैं तुम से वैसा कह देता,
क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने[b] जा
रहा हूँ। 3 यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह
तैयार[c] करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ
ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी मेरे
साथ रहो। 4 जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ का रास्ता
तुम जानते हो।"
5 थोमा ने उन से कहा, "प्रभु, हम नहीं
जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं, तो रास्ता
कैसे जानेंगे?"
6 यीशु ने उससे कहा, "रास्ता और सच्चाई
और ज़िन्दगी मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई
पिता के पास नहीं पहुँच सकता है। 7 अगर
तुम मुझे पहचानते, तो मेरे पिता को भी
पहचानते, और अब उन्हें जानते हो, और
उन्हें देखा भी है।"
8 फ़िलिप्पुस ने उन से कहा, "प्रभु, हमें पिता
को देखना है, यही हमारे लिए काफ़ी है।"
9 यीशु ने उससे कहा, "फ़िलिप्पुस, मैं इतने
दिन से तुम्हारे साथ हूँ, फिर भी क्या तुम
मुझे नहीं जानते? जिस ने मुझे देखा है उसने
पिता को देखा है। तुम क्यों कहते हो कि हमें
पिता को देखना है? 10 क्या तुम विश्वास
नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ
में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी
ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रह
कर अपने काम करते हैं। 11 मेरा ही विश्वास
करो कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं,
नहीं तो मेरे कामों ही के कारण मेरा भरोसा
करो।
12 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मुझ
पर विश्वास रखता है, वह भी उनकामों को
करेगा जिन्हें मैं करता हूँ। यहाँ तक कि इन से

[a] **13.31** बाकी ग्यारहों से [b] **14.2** इन्तज़ाम करने [c] **14.3** इन्तज़ाम

भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास
जाता हूँ। 13 जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे,
मैं वही करूँगा ताकि बेटे के द्वारा पिता की
महिमा हो। 14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से
कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा। 15 यदि तुम
मुझ से प्यार करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को
मानोगे।
16 मैं पिता से बिनती करूँगा, और वह
तुम्हें एक और मददगार देंगे ताकि वह
हमेशा तुम्हारे साथ रहे, 17 अर्थात् सच्चाई का
आत्मा, जिसे संसार पा नहीं सकता, क्योंकि
वह न तो उसे देखता है और न ही उसे जानता
है। तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे
साथ रहता है, और वह तुम में होगा। 18 मैं
तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आता
हूँ। 19 और थोड़ी देर रह गयी है कि फिर
संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे।
इसलिए कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित
रहोगे। 20 उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने
पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में।
21 जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं, और वह
उन आज्ञाओं को मानता है, वही मुझ से प्रेम
रखता है। जो मुझ से प्रेम रखता है, उससे मेरा
पिता प्रेम रखता है। मैं भी उससे प्रेम रखता हूँ,
और अपने आपको उस पर प्रगट करूँगा।"
22 उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उन
से कहा, "प्रभु, ऐसा क्यों, कि आप अपने
आपको हम पर प्रगट करना चाहते हैं लेकिन
संसार पर नहीं?"
23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई
मुझ से प्रेम रखेगा, तो वह मेरी बातों को
मानेगा, और मेरे पिता उससे प्रेम रखेंगे। हम
उसके पास आएँगे, और उसके साथ रहने
लगेंगे। 24 जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे
वचन को नहीं मानता। जो वचन तुम सुनते हो
वह मेरा नहीं, वरन् पिता का है जिन्होंने मुझे
भेजा। 25 ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए
तुम से कहीं। 26 परन्तु मददगार अर्थात् पवित्र
आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेंगे, वह तुम्हें
सब बातें सिखाएगा। जो कुछ मैंने तुम से
कहा है, उन बातों की तुम्हें याद दिलाएगा।
27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी
शान्ति तुम्हें देता हूँ। जैसी शान्ति संसार देता
है, मैं तुम्हें नहीं देता। तुम्हारा मन न घबराए
और न व्याकुल हो। 28 तुमने सुना, कि मैंने
तुम से कहा कि मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास
फिर आता हूँ। यदि तुम मुझ से मोहब्बत
रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि
मैं पिता के पास जाता हूँ क्योंकि पिता मुझ
से बड़े हैं। 29 मैंने ऐसा होने से पहले तुम से
कह दिया है, कि जब ऐसा हो जाए, तो तुम
विश्वास करो। 30 मैं अब से तुम्हारे साथ
और अधिक बातें न करूँगा, क्योंकि इस
संसार का अधिकारी आता है, और मुझ में
उसका कोई भाग नहीं। 31 परन्तु यह इसलिए
होता है ताकि दुनिया जाने कि मैं पिता से प्रेम
रखता हूँ, और जिस प्रकार पिता ने मुझे आज्ञा
दी, मैं वैसे ही करता हूँ। उठो, यहाँ से चलें।"

15 "अंगूर की सच्ची लता मैं हूँ और मेरे
पिता किसान हैं। 2 जो डाली मुझ
में है, और फल नहीं लाती, उन्हें वह काट
डालते हैं। जो फल लाती है, उसे वह छाँटते
हैं ताकि और फले। 3 तुम उन बातों के कारण
जो मैंने तुम से कहीं हैं, शुद्ध हो। 4 तुम मुझ
में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि
अंगूर की लता में बनी न रहे, तो अपने आप
से नहीं फल सकती, वैसे ही यदि तुम भी मुझ
में बने न रहो तो नहीं फल सकते। 5 मैं अंगूर
की लता हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना
रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल लाता
है। मुझ से अलग रह कर तुम कुछ भी नहीं

कर सकते। 6 यदि कोई मुझ में बना न रहे,
तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता है
और सूख जाता है। लोग उन डालियों को
बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल
जाती हैं।
7 यदि तुम मुझ में बने रहे। और मेरी बातें
तुम में बनी रहें तो जो चाहो माँगो, वह तुम्हारे
लिए हो जाएगा। 8 मेरे पिता की महिमा इसी
से होती है कि तुम बहुत फल लाओ, तब ही
तुम मेरे शिष्य ठहरोगे। 9 जैसा पिता ने मुझ से
प्रेम रखा, वैसे ही मैंने भी तुम से प्रेम रखा। मेरे
प्रेम में बने रहो। 10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को
मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसा कि मैंने
अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और
उनके प्रेम में बना रहता हूँ। 11 मैंने ये बातें
तुम से इसलिए कही हैं, ताकि मेरी खुशी तुम
में बनी रहे, और तुम्हारी खुशी पूरी हो जाए।
12 मेरा आदेश यह है कि जैसा मैंने तुम से प्रेम
रखा, वैसा ही प्रेम तुम भी एक दूसरे से रखो।
13 इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई
अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे। 14 जिन
बातों का मैं तुम्हें आदेश देता हूँ, उन्हें यदि तुम
करते हो, तो तुम मेरे दोस्त हो। 15 अब से मैं
तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता
कि उसका स्वामी क्या करता है। मैंने तुम्हें
दोस्त कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें अपने
पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।
16 तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना
है और तुम्हें ठहराया है ताकि तुम जाकर फल
लाओ, और तुम्हारा फल बना रहे ताकि तुम
मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें
दे। 17 इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिए
देता हूँ ताकि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।
18 यदि संसार तुम से दुश्मनी रखता है, तो
तुम जानते हो कि उसने तुम से पहले मुझ
से भी दुश्मनी रखी। संसार अपनों से प्रीति
रखता है। 19 यदि तुम संसार के होते, तो
वह तुम से प्रीति रखता। तुम संसार के नहीं,
बल्कि मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है
इसीलिए संसार तुम से दुश्मनी रखता है।
20 जो बात मैंने तुम से कहीं थीं कि दास
अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसे याद
रखो। अगर उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी
सताएँगे। अगर उन्होंने मेरी बात मानी, तो
तुम्हारी भी मानेंगे। 21 परन्तु यह सब कुछ
वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे,
क्योंकि वे मेरे भेजने वाले परमेश्वर को नहीं
जानते। 22 अगर मैं न आता और उन से बातें न
करता, तो वे दोषी न ठहरते। अब उन्हें उनके
अपराध के लिए कोई बहाना नहीं है। 23 जो
मुझ से दुश्मनी रखता है, वह मेरे पिता से भी
दुश्मनी रखता है। 24 यदि मैं उनके बीच वे
काम न करता जो और किसी ने नहीं किए तो
वे दोषी नहीं ठहरते। लेकिन अब उन्होंने मुझे
और मेरे पिता दोनों को देखा है, और दोनों
से दुश्मनी की है। 25 यह इसलिए हुआ ताकि
वह वचन पूरा हो जो उनकी धर्म पुस्तक में
लिखा है कि, 'उन्होंने मुझ से बेकार में बैर
किया।' 26 परन्तु जब वह सहायक आएगा,
जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा,
अर्थात् सच्चाई का आत्मा जो पिता की ओर
से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।
27 तुम भी गवाह हो, क्योंकि तुम आरम्भ से
मेरे साथ रहे हो।"

16 "ये बातें मैंने तुम से इसलिए कहीं
ताकि तुम ठोकर न खाओ। 2 वे तुम्हें
आराधनालयों में से निकाल देंगे, बल्कि वह
समय आता है कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा
वह समझेगा कि वह परमेश्वर की सेवा
करता है। 3 यह वे इसलिए करेंगे क्योंकि
उन्होंने न तो पिता को जाना है और न ही

मुझे जानते हैं। 4 लेकिन ये बातें मैंने इसलिए
तुम से कहीं कि जब उनका समय आए तो
तुम्हें याद आ जाए कि मैंने तुम से पहले ही
कहा था। मैंने शुरू में तुम से ये बातें इसलिए
नहीं कहीं, क्योंकि मैं उस समय तुम्हारे साथ
था।

5 अब मैं अपने भेजने वाले के पास जाता
हूँ और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता
कि मैं कहाँ जाता हूँ। 6 परन्तु मैंने जो ये बातें
तुम से कहीं हैं, इसलिए तुम्हारा मन शोक
से भर गया है। 7 तौभी मैं तुम से सच कहता
हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है।
यदि मैं न जाऊँ, तो वह मददगार तुम्हारे पास
न आएगा। परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे
तुम्हारे पास भेज दूँगा।

8 वह आकर संसार को अपराध,
धार्मिकता और इन्साफ़ के विषय में कायल
करेगा। 9 अपराध के विषय में इसलिए
क्योंकि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।
10 और धार्मिकता के विषय में इसलिए
क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। तुम
मुझे फिर न देखोगे। 11 न्याय के विषय में
इसलिए कि दुनिया का अधिकारी दोषी
ठहराया गया है।

12 मुझे तुम से और भी बहुत बातें कहनी
हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।
13 लेकिन जब वह, अर्थात् सत्य का आत्मा
आएगा, तो तुम्हें सब कुछ सिखाएगा क्योंकि
वह अपनी ओर से न कहेगा, लेकिन जो कुछ
सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें
तुम्हें बताएगा। 14 वह मेरी महिमा करेगा,
क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें
बताएगा। 15 जो कुछ पिता का है, वह सब
मेरा है। इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों
में से लेकर तुम्हें बताएगा। 16 थोड़ी देर के
बाद तुम मुझे न देखोगे, लेकिन फिर थोड़ी
देर बाद मुझे देखोगे।"

17 तब उनके कई शिष्यों ने आपस में कहा,
"यह बात क्या है जो वह हमसे कहते हैं कि
थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, परन्तु फिर
थोड़ी देर बाद मुझे देखोगे? और यह इस
कारण कि मैं पिता के पास जाता हूँ?" 18 तब
उन्होंने कहा, 'यह थोड़ी देर' का क्या मतलब
है? हम नहीं जानते कि वह कहना क्या चाहते
हैं।"

19 यह जान कर कि वे मुझ से पूछना चाहते
हैं, यीशु ने उन से कहा, "क्या तुम आपस में
मेरी इस बात के विषय में पूछ-ताछ करते
हो, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, परन्तु
फिर थोड़ी देर बाद मुझे देखोगे? 20 मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ कि तुम रोओगे और
विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा।
तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द
बन जाएगा। 21 जब महिला के बच्चा उत्पन्न
करने का समय आता है, तो उसको दर्द होता
है, क्योंकि ऐसा होता ही है। जब बच्चा जन्म
ले लेता है, तब जगत में एक मनुष्य का जन्म
हुआ, इस आनन्द से वह महिला अपने कष्ट
को फिर याद नहीं करती है। 22 तुम्हें भी अभी
तो दर्द है, लेकिन मैं तुम से फिर मिलूँगा और
तुम्हारे मन में खुशी होगी। तुम्हारी यह खुशी
कोई तुम से छीन न पाएगा।

23 उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे
परन्तु मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि
यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम
से तुम्हें देंगे। 24 अब तक तुमने मेरे नाम
से कुछ नहीं माँगा। माँगो तो पाओगे ताकि
तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। 25 मैंने ये बातें
तुम से दृष्टान्तों में कही हैं, परन्तु वह समय
आता है कि मैं तुम से दृष्टान्तों में फिर बातें

नहीं करूँगा, किन्तु स्पष्ट रूप से तुम्हें पिता
के विषय में बताऊँगा। 26 उस दिन तुम मेरे
नाम से माँगोगे। मैं तुम से यह नहीं कहता
कि मैं तुम्हारे लिए पिता से बिनती करूँगा।
27 क्योंकि पिता तो खुद ही तुम से प्यार करते
हैं, क्योंकि तुमने मुझ से प्यार किया है, और
यह भी विश्वास किया है कि मैं पिता की
ओर से आया हूँ। 28 मैं पिता से निकल कर
जगत में आया हूँ, फिर जगत को छोड़कर
पिता के पास जाता हूँ।"
29 यीशु के शिष्यों ने कहा, "देखिये, अब
तो आप साफ़-साफ़ कहते हैं, और दृष्टान्त
रूप में नहीं कहते। 30 अब हम जान गए, कि
आप सब कुछ जानते हैं। यह आवश्यक नहीं
कि कोई आप से पूछे। इस से हम यह मान
लेते हैं कि आप परमेश्वर से निकले हैं।"
31 यह सुन कर यीशु ने उन से कहा, "क्या
तुम अब भरोसा करते हो? 32 देखो, वह
समय आता है, वरन् आ चुका है कि तुम
सब तित्तर-बित्तर होकर अपना-अपना मार्ग
लोगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे। लेकिन मैं
अकेला नहीं, क्योंकि पिता मेरे साथ हैं।
33 मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं कि
तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। दुनिया में तुम्हें
क्लेश होता है, परन्तु धीरज रखो, मैंने दुनिया
को जीत लिया है।"

17 ये बातें कहने के बाद, यीशु ने अपनी
आँखें आकाश[a] की तरफ़ उठा कर
कहा, "पिता, वह समय आ पहुँचा है। अब
अपने बेटे की महिमा कीजिए ताकि बेटा
भी आपकी महिमा करे। 2 क्योंकि आपने
उसे सब मनुष्यों पर अधिकार दिया है।
यह इसलिये कि जिन्हें आपने उसे दिया है,
उन सब को वह अनन्त जीवन दे। 3 अनन्त
जीवन यह है कि वे आप सर्वश्रेष्ठ और सच्चे
परमेश्वर को एवं यीशु मसीह को, जिसे
आपने भेजा है, जानें।
4 जो काम आपने मुझे करने को दिया था,
उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर आपको इज़्ज़त
दी है। 5 अब पिता, आप अपने साथ उस
महिमा से मेरी महिमा कीजिए जो मेरी महिमा
जगत के होने से पहले आपके साथ थी।
6 मैंने आपका नाम उन लोगों पर प्रगट
किया जिन्हें आपने जगत में से मुझे दिया। वे
आपके ही थे और आपने उन्हें मुझे दिया और
उन्होंने आपके वचन को मान लिया है। 7 अब
वे जान गए हैं कि जो कुछ आपने मुझे दिया
है, वह सब आपकी तरफ़ से है। 8 क्योंकि
जो बातें आपने मुझे दीं, उन बातों को मैंने
उन्हें दिया और उन्होंने उन्हें स्वीकार किया।
उन्होंने सच-सच जान लिया है कि मैं आपकी
ओर से निकला हूँ। उन्होंने यह विश्वास कर
लिया है कि आप ही ने मुझे भेजा है।
9 मैं सारी दुनिया के लिए बिनती नहीं
करता। मैं उन्हीं के लिए बिनती करता हूँ
जिन्हें आपने मुझे दिया है, क्योंकि वे आपके
हैं। 10 जो कुछ मेरा है वह सब आपका है
और जो आपका है, वह मेरा है। इन के द्वारा
मेरी महिमा प्रगट हुई है। 11 मैं इसके आगे
जगत में न रहूँगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे।
मैं आपके पास आता हूँ। पवित्र पिता, अपने
उस नाम से जो आपने मुझे दिया है उनकी
रक्षा कीजिए, ताकि वे हमारे समान एक हों।
12 जब मैं उनके साथ था, तब मैंने आपके उस
नाम से, जो आपने मुझे दिया है, उनकी रक्षा

[a] **17.1** ऊपर

की। मैंने उनकी चौकसी की और विनाश के
पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ,
इसलिए कि बाइबल की बात पूरी हो।
13 परन्तु अब मैं आपके पास आता हूँ, और
ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे मेरा आनन्द
अपने में पूरा पाएँ। 14 मैंने आपका वचन उन्हें
पहुँचा दिया है। संसार ने उन से शत्रुता की,
क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे
भी संसार के नहीं हैं।
15 मैं यह बिनती नहीं करता कि आप उन्हें
जगत से उठा लें, किन्तु यह कि आप उन्हें
उस दुष्ट से बचाए रखें। 16 जैसे मैं संसार का
नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। 17 सत्य के
द्वारा उन्हें पवित्र करें। आपका वचन सत्य है।
18 जैसे आपने दुनिया में मुझे भेजा है, वैसे ही
मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 उनके लिए
मैं अपने आप को अलग करता हूँ, ताकि वे
भी सत्य के द्वारा अलग किए जाएँ।
20 मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं
करता, लेकिन उनके लिए भी जो इन के
वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे ताकि
वे सब एक हों। 21 पिता, जैसे आप मुझ में
हैं, और मैं आप में हूँ, वैसे वे भी हम में
हों, इसलिए कि सब लोग विश्वास करें कि
आपने मुझे भेजा है।
22 वह महिमा जो आपने मुझे दी, मैंने उन्हें
दी है ताकि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम
एक हैं। 23 मैं उन में और आप मुझ में ताकि
वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और दुनिया जाने
कि आप ही ने मुझे भेजा है, और जैसा आपने
मुझ से प्रेम रखा है, वैसा ही उन से प्रेम रखा
है।
24 पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें आपने मुझे
दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों कि
वे मेरी उस महिमा को देखें जो आपने मुझे दी
है, क्योंकि आपने जगत की उत्पत्ति से पहिले
मुझ से प्रेम रखा।
25 हे अति पवित्र पिता, दुनिया ने आपको
नहीं जाना, परन्तु मैंने आपको जाना है और
इन्होंने भी जाना है कि आप ही ने मुझे भेजा
है। 26 मैंने आपका नाम उनको बताया है और
बताता रहूँगा कि जो प्रेम आप को मुझ से था,
वह उन में रहे और मैं उन में रहूँ।”

18 यीशु ये बातें कह कर अपने शिष्यों
के साथ किद्रोन के नाले के पार में
गए। 2 उनका पकड़वाने वाला यहूदा भी उस
जगह को जानता था, क्योंकि यीशु अपने
शिष्यों के साथ वहाँ अक्सर जाया करते थे।
3 तब यहूदा पलटन को और प्रधान पुरोहितों
और फ़रीसियों की ओर से सेवकों को लेकर
दीपक, मशालें और हथियार लेकर वहाँ
आया।
4 उनके साथ क्या होने वाला है यह जानते
हुए, यीशु वहाँ से बाहर आए, और उन्होंने
उन लोगों से पूछा, “किसे ढूँढते हो?”
5 उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “यीशु नासरी
को।” यीशु ने उन से कहा, “मैं ही हूँ।” उनका
पकड़वाने वाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा
था।
6 यीशु के यह कहते ही, कि मैं हूँ, वे पीछे
हटे और ज़मीन पर गिर पड़े।
7 तब यीशु ने फिर उन से पूछा, “तुम किस
को ढूँढते हो?”
8 वे बोले, “यीशु नासरी को।” यीशु ने उत्तर
दिया, “मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि वह मैं
ही हूँ। यदि तुम मुझे ही चाहते हो तो इन्हें
जाने दो।” 9 यह ऐसा इसलिए हुआ कि वह

बात पूरी हो, जो यीशु ने कही थी कि जिन्हें आपने मुझे दिया है, उन में से मैंने एक को भी न खोया।

10 शमौन पतरस ने अपने पास से तलवार निकाली और महायाजक के दास पर चला कर उसका दाहिना कान काट दिया। उस दास का नाम मलखुस था। 11 तब यीशु ने पतरस से कहा, "अपनी तलवार म्यान में रख। जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊँ?"

12 तब सिपाहियों, उनके अधिकारियों और यहूदियों के सेवकों ने यीशु को पकड़ कर बान्ध लिया। 13 वे पहिले उसे हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह उस साल के महापुरोहित काइफ़ा का ससुर था। 14 यह वही काइफ़ा था, जिस ने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिए एक पुरुष का मरना अच्छा है।

15 शमौन पतरस तथा एक और शिष्य भी यीशु के पीछे चल पड़े। यह शिष्य महापुरोहित का जाना पहचाना था। वह यीशु के साथ महापुरोहित के आंगन में गया। 16 परन्तु पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। तब वह दूसरा शिष्य जो महायाजक का जाना पहचाना था, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कह कर पतरस को भीतर ले आया।

17 उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, "क्या तुम भी इस मनुष्य के शिष्यों में से हो?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।"

18 दास और सेवक जाड़े के कारण कोयला जलाकर खड़े होकर आग ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा हुआ ताप रहा था।

19 तब प्रधान पुरोहित ने यीशु से उनके शिष्यों के विषय में और उनके उपदेश के विषय में पूछा।

20 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैंने जगत से खुलकर बातें की। मैंने सभाओं और आराधनालय में जहाँ सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं, सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा 21 तुम मुझ से क्यों पूछते हो? सुनने वालों से पूछो कि मैंने उन से क्या कहा? देखो, वे जानते हैं कि मैंने क्या-क्या कहा"

22 जब यीशु ने यह कहा, तो सेवकों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मार कर कहा, "क्या तू प्रधान पुरोहित को इस प्रकार उत्तर देता है?"

23 यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि मैंने बुरा कहा, तो मुझे बताओ कि क्या बुरा कहा, परन्तु यदि ठीक कहा, तो मुझे क्यों मारते हो?"

24 हन्ना ने उन्हें बन्धे काइफ़ा प्रधान पुरोहित के पास, भेज दिया।

25 तब उन लोगों ने पतरस से कहा, "क्या तुम भी उनके शिष्यों में से हो?" उसने इन्कार करके कहा, "मैं नहीं हूँ।"

26 प्रधान पुरोहित के दासों में से एक जो उसके कुटुम्ब में से था और जिस का कान पतरस ने काट डाला था, बोला, "क्या मैंने तुम्हें यीशु के साथ बगीचे में न देखा था?"

27 पतरस ने फिर इन्कार किया और तुरन्त मुर्गे ने बाँग दी।

28 वे यीशु को काइफ़ा के पास से किले में ले गए। वह सुबह का समय था, परन्तु वे

खुद किले के भीतर न गए ताकि अशुद्ध न हों, परन्तु फ़सह खा सकें।
29 तब पिलातुस उनके पास बाहर निकल
आया और उसने कहा, “तुम इस मनुष्य पर
किस बात का दोष लगाते हो?”
30 उन लोगों ने उसे उत्तर दिया, “यदि वह
अपराधी न होता, तो हम उसे आपके हाथ न
सौंपते।”
31 पिलातुस ने उन से कहा, “तुम ही ले
जाकर अपनी व्यवस्था[a] के अनुसार उसका
न्याय करो।” यहूदियों ने उससे कहा, “हमें
अधिकार नहीं कि किसी की जान लें।”
32 यह इसलिए हुआ कि यीशु की वह बात
पूरी हो जो उन्होंने कही थी कि उनका मरना
कैसा होगा।
33 तब पिलातुस फिर किले के
भीतर गया और यीशु को बुलाकर, उसने उन
से पूछा, “क्या तुम यहूदियों के राजा हो?”
34 यीशु ने जवाब में कहा, “क्या आप यह
बात अपनी ओर से कहते हैं या दूसरों ने मेरे
विषय में आप से कही?”
35 पिलातुस ने उत्तर दिया, “क्या मैं यहूदी
हूँ? तुम्हारी ही जाति और महापुरोहितों ने
तुम्हें मेरे हाथ सौंपा हैं। तुमने ऐसा क्या किया
है?”
36 यीशु ने उत्तर दिया, “मेरा राज्य इस जगत
का नहीं। यदि मेरा राज्य इस जगत का होता,
तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ
सौंपा न जाता। परन्तु अभी मेरा राज्य यहाँ
का नहीं।”
37 पिलातुस ने उन से कहा, “तो क्या तुम
राजा हो?” यीशु ने उत्तर दिया, “तुम ठीक
कहते हो, क्योंकि मैं राजा हूँ। मैंने इसलिए
जन्म लिया, और मैं इसलिए जगत में आया
हूँ कि सत्य पर गवाही दूँ। जो कोई सत्य का
है, वह मेरा शब्द सुनता है।
38 पिलातुस ने उन से कहा, “सत्य क्या
है?” यह कह कर वह फिर यहूदियों के पास
निकल गया और उन से कहने लगा, “में तो
उसमें कुछ दोष नहीं पाता।
39 परन्तु तुम्हारा
यह रिवाज़ है कि मैं फ़सह में तुम्हारे लिए
एक व्यक्ति को छोड़ दूँ। क्या तुम चाहते
हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को
छोड़ दूँ?”
40 तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, “यीशु
को नहीं, परन्तु हमारे लिए बरअब्बा को
छोड़ दो।” बरअब्बा एक डाकू था।

19 इस पर पिलातुस ने यीशु को लेकर
कोड़े लगवाए,
2 और सिपाहियों ने
काँटों का मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा।
उन लोगों ने उन्हें बैजनी वस्त्र पहनाया।
3 वे
उनके पास आकर कहने लगे, “यहूदियों के
राजा, प्रणाम!” और उन्होंने यीशु को थप्पड़
भी मारे।
4 तब पिलातुस ने फिर बाहर निकल कर
लोगों से कहा, “देखो, मैं उसे तुम्हारे पास
फिर बाहर लाता हूँ, ताकि तुम्हें मालूम हो
कि मैं इस में कुछ भी दोष नहीं पाता।”
5 तब यीशु काँटों का मुकुट और बैजनी
कपड़े पहने हुए बाहर निकले। पिलातुस ने
उन से कहा, “देखो, यह पुरुष!”
6 जब प्रधान पुरोहितों और सेवकों ने उन्हें
देखा, तो चिल्लाकर कहा, “उसे क्रूस पर
चढ़ाओ, क्रूस पर।” पिलातुस ने उन से कहा,
“तुम ही उन्हें लेकर क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि
मुझे उसमें कोई दोष दिखायी नहीं देता।”
7 यहूदियों ने पिलातुस को उत्तर दिया,
“हमारा भी कानून है, उस कानून के अनुसार
वह मारे जाने के लायक है, क्योंकि उसने
अपने आप को परमेश्वर का पुत्र कहा है।”

[a] **18.31** नियमशास्त्र

8 जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी
डर गया। 9 वह फिर किले के भीतर गया और
यीशु से बोला, “तुम कहाँ के हो?” परन्तु
यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।
10 पिलातुस ने उसे कहा, “मुझ से क्यों नहीं
बोलते? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हें छोड़
देने का और क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे
अधिकार है?”
11 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि तुम्हें ऊपर
से न दिया जाता, तो तुम्हारा मुझ पर कुछ
अधिकार न होता। इसलिए जिस ने मुझे
तुम्हारे हाथ पकड़वाया है, उसका अपराध
ज़्यादा है।”
12 यह सुन कर पिलातुस ने उसे छोड़ देना
चाहा, लेकिन यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर
कहा, “यदि आप इस को छोड़ देंगे तो
आपकी वफ़ादारी कैसर के लिए नहीं है।
जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह
कैसर का विरोध करता है।”
13 ये बातें सुन कर पिलातुस यीशु को
बाहर लाया। उस जगह एक चबूतरा था
जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है, और वह
न्याय-आसन पर बैठ गया। 14 यह फ़सह की
तैयारी का दिन था और दोपहर का समय था।
तब उसने यहूदियों से कहा, “देखो, यही है
तुम्हारा राजा!”
15 परन्तु वे चिल्लाए, “ले जाओ! ले जाओ!
उसे क्रूस पर चढ़ाओ!” पिलातुस ने उन से
कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर
चढ़ाऊँ?” प्रधान पुरोहितों ने उत्तर दिया कि
कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं
है।
16 तब उसने यीशु को उनके हाथ सौंप दिया
ताकि वह क्रूस पर चढ़ाए जाएँ। 17 उसके
बाद वे यीशु को ले गए। वह अपना क्रूस
उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गए, जो
खोपड़ी का स्थान कहलाता है। इब्रानी में उसे
गुलगुता कहा जाता है।
18 वहाँ उन्होंने यीशु और उनके साथ और
दो चोरों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को बाएँ
और दूसरे को दाएँ, और बीच में यीशु को
चढ़ाया।
19 पिलातुस ने एक आरोप-पत्र लिख कर
क्रूस पर लगा दिया। उस पर इस प्रकार
लिखा हुआ था, ‘यीशु नासरी यहूदियों का
राजा।’
20 यह आरोप-पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा
क्योंकि वह जगह जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाये
गए थे, नगर के पास था। यह पत्र इब्रानी,
लैटिन और यूनानी भाषा में लिखा हुआ था।
21 तब यहूदियों के महापुरोहित ने पिलातुस
से कहा, “यहूदियों का राजा’ मत लिखो,
परन्तु यह कि उसने कहा, ‘मैं यहूदियों का
राजा हूँ’।”
22 पिलातुस ने उत्तर दिया, “मैंने जो लिख
दिया, वह लिख दिया।”
23 जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा
चुके, तो उन लोगों ने यीशु के कपड़े लेकर
चार हिस्से किए। हर सिपाही के लिए एक
भाग और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिना
सिलाई के ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था।
24 इसलिए उन्होंने आपस में कहा कि हम
उसको न फाड़ें, लेकिन इस पर पर्ची डालें कि
वह किस का होगा। यह इसलिए हुआ कि
पवित्रशास्त्र[a] की बात पूरी हो कि उन्होंने मेरे
कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे कपड़ों
पर पर्ची डाली।
25 इसलिए सिपाहियों ने ऐसा ही किया।
परन्तु यीशु के क्रूस के पास उनकी माता
और उनकी माता की बहन, क्लोपास की

[a] **19.24** बाइबल

पत्नी मरियम और मरियम मगदलीनी खड़ी थी। 26 यीशु ने अपनी माता और उस शिष्य को जिस से वह प्रेम रखते थे, पास खड़े देख कर अपनी माता से कहा, “महिला, देखो, यह आपका बेटा है।”

27 उसके बाद उस शिष्य से कहा, “यह तुम्हारी माँ हैं!” उसी समय से वह शिष्य मरियम को अपने घर ले गया।

28 इसके बाद यह जान कर कि अब सब कुछ हो चुका है, यीशु ने कहा, “मैं प्यासा हूँ” ताकि पवित्रशास्त्र[a] की बात पूरी हो।

29 वहाँ एक सिरके से भरा हुआ बर्तन रखा था। इसलिए उन्होंने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफ़े पर रख कर उनके मुँह से लगाया।

30 जब यीशु ने वह सिरका लिया तो कहा, “पूरा हुआ” और सिर झुका कर प्राण त्याग दिए।

31 वह तैयारी का दिन था। इसलिये यहूदियों ने पिलातुस से बिनती की, कि उनके पैर तोड़ दिए जाएँ और वे उतारे जाएँ, ताकि सब्त के दिन वे क्रूस पर न रहें। वह सब्त का खास दिन था। 32 सिपाहियों ने आकर पहले एक की टाँगें तोड़ीं, तब दूसरे की भी, जो उनके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे। 33 लेकिन जब उन्होंने यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुके हैं, तो उनकी टाँगें न तोड़ीं। 34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने बर्छी से उनके सीने में मारा और उस में से तुरन्त खून और पानी निकला।

35 जिस ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है ताकि तुम भी विश्वास करो। 36 ये बातें इसलिए हुईं कि बाइबल की यह बात पूरी हो कि उनकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।

37 एक अन्य स्थान पर यह लिखा है, कि जिस यीशु को उन्होंने बेधा है, वे उसी को देखेंगे। 38 इन बातों के बाद अरमतियाह के यूसुफ़ ने, जो यीशु का शिष्य था[b], पिलातुस से बिनती की, कि उसे यीशु की लाश ले जाने दी जाए। तब पिलातुस ने उसकी बिनती सुनी, और वह आकर यीशु के लाश को ले गया।

39 नीकुदेमुस भी जो पहले यीशु के पास एक रात को गया था, लगभग पचास सेर मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। 40 तब उन्होंने यीशु की लाश को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे खुशबूदार मसालों[c] के साथ कफ़न में लपेटा।

41 उस स्थान पर जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए थे, एक बगीचा था। उस बगीचे में एक नई कब्र थी, जिस में कभी किसी को न रखा गया था। 42 यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।

20 सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को जब अँधेरा ही था, कब्र पर आयी। उसने पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा। 2 तब वह दौड़ कर गयी और शमौन पतरस और उस दूसरे शिष्य के पास जिस से यीशु प्रेम रखते थे आकर कहा, “वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं। हम नहीं जानते, कि उन्हें कहाँ रख गया है।”

3 तब पतरस और वह दूसरा शिष्य निकल कर कब्र की ओर चले। 4 दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा शिष्य पतरस से

[a] **19.28** बाइबल [b] **19.38** परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था [c] **19.40** द्रव्य

आगे बढ़ कर कब्र पर पहले पहुँचा। 5 उसने
झुक कर कपड़े पड़े देखे, फिर भी वह भीतर
न गया। 6 तब शमौन पतरस उसके बाद
पहुँचा और कब्र के भीतर गया। उसने भी
कपड़े पड़े देखे। 7 उसने वह अँगोछा जो
यीशु के सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के
साथ पड़ा हुआ नहीं, परन्तु अलग एक जगह
लपेटा हुआ देखा। 8 दूसरा शिष्य भी जो कब्र
पर पहले पहुँचा था, भीतर गया और उसने
देख कर विश्वास किया।
9 वे अब तक पवित्रशास्त्र[a] की वह बात न
समझते थे कि यीशु को मरे हुओं में से जी
उठना होगा। 10 उसके बाद ये शिष्य अपने
घर लौट गए,
11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही
खड़ी रही। 12 उसने रोते-रोते कब्र की ओर
झुक कर दो स्वर्गदूतों को उज्जवल कपड़े
पहने हुए, एक को सिरहाने और दूसरे को
पैताने बैठे देखा, जहाँ पहले यीशु का शव
पड़ा था।
13 उन्होंने उससे कहा, “महिला, तुम क्यों
रोती हो?” उसने उन से कहा, “वे मेरे स्वामी
को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उन्हें
कहाँ रखा है।”
14 यह कह कर वह मुड़ी और उसने यीशु
को खड़े देखा, लेकिन न पहचाना कि यह
यीशु हैं।
15 यीशु ने उससे कहा, “हे महिला, तुम
क्यों रोती हो? किस को ढूँढती हो?” उसने
माली समझ कर उन से कहा, “महाराज, यदि
आपने उसे उठा लिया है तो मुझे बताओ कि
उन्हें कहाँ रखा है ताकि मैं उन्हें ले जाऊँ।”
16 यीशु ने उससे कहा, “मरियम!” उसने
पीछे मुड़ कर कहा, “गुरु जी”
17 यीशु ने उससे कहा, “मुझे मत छुओ,
क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं
गया। मेरे भाईयों के पास जाकर उन से कह
दो, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और
अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के
पास ऊपर जाता हूँ।”
18 मरियम मगदलीनी ने जाकर शिष्यों को
बताया कि मैंने प्रभु को देखा है और उन्होंने
मुझ से ये बातें कहीं।
19 वह सप्ताह का पहला दिन था और शाम
का समय था। यहूदियों के डर के कारण
शिष्यों ने कमरे के दरवाज़े बन्द कर रखे थे।
तब यीशु आए और बीच में खड़े होकर उन
से बोले, “तुम्हें शान्ति मिले।”
20 यह कह कर यीशु ने अपना ने हाथ और
अपनी छाती उनको दिखाई। तब शिष्य प्रभु
को देख कर आनन्दित हुए।
21 यीशु ने फिर उन से कहा, “तुम्हें शान्ति
मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं
भी तुम्हें भेजता हूँ।”
22 यह कह कर यीशु ने उन पर फूँका और
उन से कहा, “पवित्र आत्मा लो। 23 जिन के
गुनाह तुम माफ़ करो, उनके लिए वे माफ़
किए गए हैं। जिन के तुम रखो, वे रखे गए
हैं।”
24 उस समय जब यीशु आए तो बारह
शिष्यों में से एक शिष्य थोमा, जो दिदुमुस
कहलाता था, उनके साथ न था। 25 जब अन्य
शिष्य उससे कहने लगे कि हम ने प्रभु को
देखा है, तब उसने उन से कहा, “जब तक मैं
उनके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ, और
कीलों के छेदों में अपनी उँगली न डाल लूँ
और उनके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ,
तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।”

[a] **20.9** बाइबल

26 आठ दिन के बाद जब उनके शिष्य घर
के भीतर थे, तब थोमा भी उनके साथ था।
दरवाज़े बन्द थे। तब यीशु ने फिर आकर
और बीच में खड़े होकर कहा, “तुम्हें शान्ति
मिले।”
27 उन्होंने थोमा से कहा, “अपनी उँगली
यहाँ लाकर मेरे हाथों को देखो और
अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डालो और
अविश्वासी नहीं, लेकिन विश्वासी बनो।”
28 यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु,
हे मेरे परमेश्वर!”
29 यीशु ने उससे कहा, “तुमने तो मुझे देख
कर विश्वास किया है। आशीषित वे हैं
जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।”
30 यीशु ने और भी कई चिन्ह शिष्यों के
सामने दिखाए, जो इस किताब में लिखे नहीं
गए। 31 परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम
विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर के बेटे,
मसीह हैं और विश्वास करके उनके नाम से
जीवन पाओ।

21 इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप
को तिबिरियास झील के किनारे
शिष्यों पर प्रगट किया। 2 शमौन पतरस और
थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील
के काना नगर का नतनएल, ज़ब्दी के पुत्र
और उनके शिष्यों में से दो और लोग वहाँ
इकट्ठे थे।
3 शमौन पतरस ने उन से कहा, “मैं मछली
पकड़ने जाता हूँ।” उन लोगों ने उससे कहा,
“हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं।” इसलिए वे
निकल कर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात उन
लोगों ने कुछ न पकड़ा। 4 भोर होते ही यीशु
किनारे पर खड़े थे, तौभी शिष्यों ने न पहचाना
कि यह यीशु हैं।
5 तब यीशु ने उन से कहा, “हे बच्चो, क्या
तुम्हारे पास कुछ खाने के लिये है?” उन
लोगों ने उत्तर दिया, “नहीं।”
6 यीशु ने उन से कहा, “नाव की दाहिनी
ओर जाल डालो, तो पकड़ोगे।” तब उन्होंने
जाल डाला, लेकिन मछलियों की बहुतायत
के कारण उसे खींच न सके।
7 इसलिए उस शिष्य ने जिस से यीशु प्यार
करते थे, पतरस से कहा, “यह तो प्रभु हैं।”
शमौन पतरस ने यह सुन कर कि प्रभु हैं, कमर
में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था।
वह झील में कूद पड़ा, 8 लेकिन बाकी शिष्य
नाव पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते
हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर
नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे।
9 जब वे किनारे पर उतरे, तो उन्होंने कोयले
की आग, और उस पर मछली रखी हुई और
रोटी देखी।
10 यीशु ने उन से कहा, “जो मछलियाँ तुमने
अभी पकड़ी हैं, उन में से कुछ लाओ।”
11 शमौन पतरस ने नाव पर चढ़कर एक
सौ तिर्पन बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल
किनारे पर खींचा, और इतनी मछलियाँ होने
से भी जाल न फटा।
12 यीशु ने उन से कहा, “आओ, खाना
खाएँ।” लेकिन शिष्यों में से किसी को हिम्मत
न हुई कि उन से पूछे कि वह कौन हैं? क्योंकि
वे जानते थे, कि हो न हो यह प्रभु ही हैं।
13 यीशु आए, और उन्होंने शिष्यों को रोटी
और मछली दी।
14 यह तीसरी बार था कि यीशु ने मरे हुओं
में से जी उठने के बाद शिष्यों को दर्शन दिए
थे।
15 खाना खा लेने के बाद यीशु ने शमौन
पतरस से कहा, “शमौन, यूहन्ना के बेटे, क्या

तुम इन से बढ़ कर मुझ से प्रेम करते हो?" उसने यीशु से कहा, "हाँ प्रभु, आप तो जानते हैं कि मैं आप से प्रेम करता हूँ।" यीशु ने उससे कहा, "मेरे मेम्नों को चराओ।"

16 उन्होंने फिर दूसरी बार उससे कहा, "शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो?" उसने उन से कहा, "हाँ प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आप से प्रेम करता हूँ।" उन्होंने उससे कहा, "मेरी भेड़ों की रखवाली करो।"

17 यीशु ने तीसरी बार उससे कहा, "शमौन, यूहन्ना के बेटे, क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो?" पतरस उदास हुआ कि यीशु ने उसे तीसरी बार ऐसा कहा, कि क्या वह उन से प्रेम करता है। वह उन से बोला, "हे प्रभु, आप तो सब कुछ जानते हैं। आप यह भी जानते हैं कि में आप से प्रेम करता हूँ।" यीशु ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चराओ। 18 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जब तुम जवान थे, तो अपनी कमर बान्ध कर जहाँ चाहते थे, वहाँ जाते थे। किन्तु जब तुम बूढ़े होगे, तो अपने हाथ फैलाओगे, और दूसरा तुम्हारी कमर बान्ध कर जहाँ तुम न चाहोगे, वहाँ तुम्हें ले जाएगा।"

19 यीशु ने इन बातों से बता दिया कि पतरस कैसी मौत से परमेश्वर की महिमा करेगा। यह कह कर यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे हो लो।"

20 पतरस ने मुड़ कर उस शिष्य को पीछे आते देखा, जिस से यीशु प्रेम रखते थे, और जिस ने खाने के समय उनके सीने की ओर झुक कर पूछा कि, "हे प्रभु, आपका पकड़वाने वाला कौन है?"

21 उसे देख कर पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, इसका क्या होगा?"

22 यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुम्हें क्या? तुम मेरे पीछे आओ।"

23 इसलिए भाईयों में यह बात फैल गई कि वह शिष्य न मरेगा। यीशु ने उससे यह नहीं कहा था, कि वह न मरेगा। उन्होंने यह कहा था कि यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुम्हें इस से क्या लेना-देना।

24 यह वही शिष्य है, जो इन बातों की गवाही देता है। उसी ने इन बातों को लिखा है। हम जानते हैं, कि उसकी गवाही सच्ची है।

25 और भी बहुत से काम यीशु ने किए, यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि जो किताबें लिखी जातीं वे दुनिया में न समातीं।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com